गायत्री सहस्रनाम

गायत्री सहस्त्रनाम

(उपयोगिता, विज्ञान, मूलपाठ व अर्थ सहित)

सम्पादक :

डॉ० चमनलाल गौतम

रचयिता व सम्पादक :

प्राणायाम के असाधारण प्रयोग, ओंकार सिद्धि, मंत्र शक्ति से रोग निवारण, विपत्ति निवारण-कामना सिद्धि, श्रीमद्‌भागवत्‌ सप्ताह कथा, योगासन से रोग निवारण, मनुस्मृति, सूर्य पुराण, कालिका पुराण, मानसागरी आदि।

प्रकाशक

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, (वेदनगर), बरेली- २४३००३ (उ०प्र०)

फोन नं० : २४७४२४२

email us at : sanskriti_sansthan59@rediffmail.com

संशोधित संस्करण 2005

मूल्य 15 रुपया

गायत्री सहस्त्रनाम

उपयोगिता और विज्ञान

परम पिता परमात्मा परम सूक्ष्म है। वह सर्वोपरि है। विश्व व्यापी विद्युत शक्ति, चुम्बकशक्ति, गुरुत्वाकर्षण शक्ति और सूक्ष्मतम गैसों से भी वह सूक्ष्मतर है। विविध नक्षत्रों से आने वाली किरणें तथा सूर्य रश्मियों के सप्त वर्ण अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण ही हमारे नेत्रों द्वारा देखे जाते हैं। रेडियो द्वारा सुनी जाने वाली ध्वनि समस्त विश्व में चक्कर लगाती है, किन्तु अपनी सूक्ष्मता के कारण ही बिना रेडियों-रिसीवर के अश्रव्य ही होती है। ध्वनि से भी अधिक तनुभाव होते हैं, ध्वनि तरंगों के समान वे भी ईश्वर रूप महतत्त्व में उड़ते रहते हैं, समस्त विश्व की परिक्रमा करते रहते हैं, मनोविज्ञानियों द्वारा आविष्कृत टेलीपैथी द्वारा उनका अस्तित्व और संचरण सुप्रमाणित ही है, पर देखना सुनना तो दूर की बात, हमारी मन और बुद्धि भी उन्हें सामान्यता ग्रहण नहीं कर पाती है। परमात्मा तो इन सब से भी तनु है, सूक्ष्म है। उसकी असंख्य शक्तियाँ हैं। उन्हें यद्यपि हम आँख, नाक, कान, जिव्हा, त्वचा और मन बुद्धि से पकड़ नहीं सकते हैं। अनुभव नहीं कर पा रहे हैं, तो भी उनकी उपस्थिति निर्विवाद है।

हम देखते हैं, जीव पैदा होता है। क्रम-क्रम में बढ़ता है। कभी बीमार होता है, कभी अच्छा होता है। इच्छा न होते हुए भी एक दिन मर जाता है। शीत के तूफान आते हैं, लूयें चलती हैं, कभी

हवा मन्द हो जाती है, कभी तीव्र, प्राणि जगत्,

वनस्पति जगत् और पदार्थ जगत् के सारे कार्य व्यापार जो रातदिन चलते रहते हैं, वे ईश्वर की विवेकमयी सूक्ष्म शक्तियों से ही परिचालित होते हैं। विज्ञानी उसे गुरुत्वाकर्षण, नक्षत्राकर्षण, अतीन्द्रिय ऊर्जा आदि नामों से अभिहित करते हैं और आध्यात्मविद् उन्हें विविध देव नामों से पुकारते हैं। विष्णु-पुराण में प्रजनन, उत्पादन, पोषण, विकास और व्यवस्था, निधनन, वारण या स्थानान्तरण करने वाली ईश्वर की चुम्बक से भी सूक्ष्म शक्तियों को क्रमशः ब्रह्मा विष्णु और शिव की संज्ञा दी हैं–

सृष्टि स्थित्यन्तकारिणी,
ब्रह्मा, विष्णु-शिवात्मिकाम्।
सः संज्ञां याति,
एक एव जनार्दनः।।

इस श्लोक में आये हुए संज्ञा पद से यह स्पष्ट है कि तथाकथित कर्षण, प्रकर्षण और विकर्षण की सूक्ष्मातिसूक्ष्म उत्पादिनी, व्यवस्थापिनी और विनाशिनी इन्द्रियातीत शक्तियाँ ही ब्रह्मा, विष्णु और शिव कहलाती हैं। एक परब्रह्म ही इन संज्ञाओं से सम्बोन्धित किया जाता है।

यम, इन्द्र, बृहस्पति, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, वसु विश्वेदेवा, उमा गणेश आदि नामों से संज्ञावती विविध शक्तियाँ एक ही शक्ति स्रोत की ऊर्मियाँ हैं, दिव्य हैं, अदृश्य-अश्रव्य और अगोचर हैं, वे प्राणिमात्र के हित-साधन में निरत हैं, सृष्टि का विकास-प्रकाश सस्नेह करती हैं, इसी से वे श्रद्धास्पद है। वंदनीय और अभिनन्दनीय होने के नाते उन्हें 'देवता– या 'देवी' जैसा

अनुराग-भरा नाम देना सर्वथा समीचीन ही है। विज्ञानी शुष्क हृदय होता है, अध्यात्मविद् कवि की भाँति भावनाशील होता है, सहृदय और सरल होता है। विज्ञानी के विश्लेषण चीर फाड़ सदृश घिनौने होते हैं, भावुक का विश्लेषण भावपूर्ण होता है। यही अन्तर वैज्ञानिक और मनस्वी भक्त के उन उन सम्बोधनों में प्रतिबिम्बित है, जो उन्होंने आम शक्ति और उसकी अनुशक्तियों के लिए निर्धारित किये हैं।

नामों और सम्बोधनों के अनुकूल ही हमारे मनों में भावोदय होता है। नदी कहने से हृदय में वैसा आह्लादकारी भावोद्रेक नहीं होता, जैसा पुण्य सलिला या 'गंगा मैया' कहने से जगता है। पानी और जल, लकड़ी और समिधा, 'आगी, और अग्नि' तत्वतः एक ही है, किन्तु नामान्तर मात्र से हृदय में भाव विशेष का उत्कर्ष-अपकर्ष सर्व संवेद्य हैं। इसी तथ्य को हृदयंगम करके भारत के पराविज्ञानी ऋषियों ने आद्या-शक्ति, वैज्ञानिकों ने तथाकथित शक्ति स्तोत्र को 'गायत्री' संज्ञा से अभिहित करना ही उचित समझा। प्रेम, पवित्रता, श्रद्धा विवेक और शक्ति का स्फुरण 'गायत्री' शब्द से जैसा होता है, वैसी मधु अनुभूति रूखी-सूखी वैज्ञानिक शब्दावली से कैसे हो सकती है।

सूर्य एक है। किरणें उसकी असंख्य हैं। सभी किरणें सूर्य ऊर्जा से युक्त हैं, सभी सतरंगी हैं। नीलोत्तर किरणें (Ultra violet Rays) और यति रक्तिम किरणों (Infra Red Rays) की प्रकृति, गुण और कार्यकारी शक्ति सर्वथा भिन्न है 'क्ष' किरण (X-Rays) अल्फा और गामा किरण की क्रिया-प्रक्रिया भी भिन्न देखी जाती है। ये और इसी तरह की दूसरी किरणों की शक्ति

वस्तुतः आदित्य की ही शक्ति है। इसी प्रकार स्वयं प्रकाश रूपा आद्या गायत्री की रश्मि रूपिणी अनन्त शक्तियाँ ही हमारे दिव्य देव और देवियाँ हैं। जलते हुए हवन-कुण्ड से जैसे चिन्गारियाँ उछलती हैं, उसी प्रकार विश्व की महान शक्ति-सरिता गायत्री की लहरें विविध देव शक्तियों के रूप में देखी जाती हैं। दूसरे शब्दों में इसी तथ्य को इस प्रकार कह सकते हैं कि सम्पूर्ण देवताओं की सम्मिलित शक्ति ही गायत्री है।

वस्तुतः विश्व व्यापी जल तत्व ही नदी, सरोवरों, कूपों, तालाब, झरनों, जलाशयों, हिमश्रृङ्गों, समुद्रों और जलधाराओं (बादलों) में भिन्न-भिन्न रूप, गुण, स्वाद और स्थिति में दिखाई पड़ता है, ठीक उसी प्रकार एक ही गायत्री महत्तत्व अगणित देव शक्तियों के रूप में देखा और समझा जा सकता है। ब्रह्माण्ड में संव्याप्त उसी की अनेक शक्तियाँ इस ज़गत का संचालन एवं नियन्त्रण करती हैं। यदि संसार में शक्तियाँ न होती, तो समस्त संसार जड़वत् गतिहीन होता। कहीं कोई क्रिया व्यापार, हलचल या गतिशीलता न होती। नितान्त जड़ता ही जड़ता होती। नीरसता ही नीरसता होती। कहीं कोई हरकत, कोई परिवर्तन, चहल-पहल या चुलबुल न होती। न हवा बहती, न जल लहराता। प्रकृति में सर्वत्र श्मशानी शून्यता ही होती। ऐसी कल्पनातीत स्थिति में न वनस्पति का आविर्भाव होता न प्राणि जगत का। संसार का जो भी सूक्ष्म-सूक्ष्म रूप आज हमें दिखाई दे रहा या अनुभव में आ रहा है उसके मूल में गायत्री महाशक्ति की विभिन्न ऊर्जा ऊर्मियाँ ही काम कर रही हैं। इसी से गायत्री को सर्वजननी, सर्वप्रसविनी भी कहा जाता है।

ऊपर के विवरण से यह भी स्पष्ट हो गया है कि सारा संसार शक्ति का खेल है। शक्ति पराकर्षण से पृथ्वी घूम रही है, सूर्य कृत्या नक्षत्र की प्रदक्षिणा कर रहा है, कृत्या अपने समस्त सौर मण्डलों और आकाश गंगाओं के साथ अभिजित नक्षत्र के चारों ओर निरन्तर चक्कर काट रही है। गायत्री शक्ति की अनन्त प्रखरता का इससे यत्किंच अनुमान ही हम कर सकते हैं। वस्तुत उसकी विशालता का, उसकी पूर्णतः का पूरा पूरा आभास देखने-सुनने की सीमित सी शक्ति रखने वाला मनुष्य नहीं कर सकता। गायत्री की शक्ति अपरिचित है। हम तो उसकी सम्यक् कल्पना भी नहीं कर सकते। बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी उसे अचिन्त्य और 'अनिर्वचनीय' कहकर ही संतोष करने को विवश हैं। अनुमानगम्य न होने के कारण वे उसे जहाँ छोड़ देते हैं और उस के गोचर रूप को ही सब कुछ मानकर चलते हैं वहाँ भारतीय ऋषि वैसा नहीं करता। वह 'अव्यक्त' की आध्यात्मिक प्रयोगों (उपासना) के द्वारा अपने अन्तरतम में अभिव्यक्ति करता है। अपनी तपः साधना के द्वारा वह अपनी बुद्धि को इतना पैना और इतना सूक्ष्मग्रा ही बना लेता है कि वह अचिन्त्य उनके लिए सुचिन्त्या हो जाता है। वह उसका हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष दर्शन पाकर कृतकृत्य हो जाते हैं। यही नहीं उसकी शक्ति से शक्तिमान होकर वे अपने सम्पर्क में आने वाले को अधिक सचेतन, अधिक स्फूर्तिवान बना देते हैं।

हममें, आपमें गायत्री शक्ति तिल में तेल, चमक में अग्नि के समान अनुस्यूत है। अद्वैत दर्शन के अनुसार तो हम और आप उसी के स्फुलिङ्ग हैं। किन्तु आज अपने में जो कमजोरी,

दुर्बलता, असमर्थता या विवशता हम देख रहे हैं, वह हमारा 'जडित-अज्ञान ही है। वैज्ञानिकों के अनुसार जब सब ओर 'प्रकृति' ही 'प्रकृति' है, हम प्रकृति के ही एक सचेतन अङ्ग हैं, उसी से उसी में उद्भूत है तो अपने को असहाय या पंगु मानना और उसी भावना से भावित होकर रात दिन उसी प्रकार का ऊहापोह करना क्या हमारे लिए लज्जास्पद नहीं है? भारतीय दर्शन कहता है कि हमारी सारी अशक्ति प्रकृति से अपने को अलग करने के कारण ही है। अपने को यदि हम प्रकृति माता से पुनः पूरी तरह से जोड़ लें, उससे तो हमने सम्बन्ध विच्छेद कर रक्खा है, उसको छोड़कर यदि हम उससे 'योग' करें, तो हम अपने में अप्रतिम शक्ति सहज ही अनुभव करने लगेंगे।

शक्ति ही सुख है, निर्बलता ही दुःख है। जिसमें जितनी क्षमता है, वह उतना ही सचेतन है, वह उतना ही खुशहाल है। इन्द्रियों में शक्ति रहने तक ही भोगों को जोड़ा जा सकता है। वे अशक्त और शिथिल हो जायें तो आकर्षक भोगों में भी आकर्षण नहीं रहता। नाड़ी संस्थान की क्षमता क्षीण होने पर मन में अवसाद, आलस्य और अन्तःक्षोभ-कुढ़न और घुटन से मनुष्य संतप्त रहता है। शरीर का सामान्य क्रिया-कलाप भी वह ठीक तरह से नहीं कर पाता है। बुद्धि की अशक्ति बुद्धि मन्दता के दुःख से दुःखी करती है, तो मानसिक शक्ति घट जाने पर वह अन्ध विश्वासों के थपेड़ों से व्याकुल रहता है। मन और बुद्धि की शक्ति क्षीण होने पर तो वह पागल ही हो जाता है। धन शक्ति न रहने पर दर-दर का भिखारी बनना पड़ता है, मित्र शक्ति न रहने पर असहयोग की ज्वाला में एकाकी जलना पड़ता है,

आत्मबल न होने पर प्रगति के पथ पर एक कदम आगे नहीं बढ़ा जा सकता। जिसमें संकल्प शक्ति नहीं घड़ी के पेण्डुलम की तरह उसका विकल जीवन इधर-उधर डोलता रहता है। अस्थिरता, उद्विग्नता, असन्तोष, अभाव, दुर्भावना आलस्य और अकर्मण्यता 'अशक्ति' के ही परिचायक हैं। ये और कुछ नहीं हैं, अपने मूल रूप में विविध प्रकार की अशक्तियां ही हैं।

इसलिए भारतीष ऋषि कहता है कि शक्ति की साधना ही सुख की साधना है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और सामाजिक शक्ति का संग्रह, संचय करना ही सन्तुष्ट, सम्पन्न सुखी और कृतकृत्य होने का सरल साधन है। हम सब सुखी होना चाहते हैं, शक्ति के जोड़ने बटोरने में अहर्निश संलग्न रहते हैं, किन्तु 'स्पष्ट दर्शन' या 'यौगिक दृष्टिकोण' न रहने के कारण अपने प्रयत्न-प्रयास में एकाग्रता और कार्य-व्यवहार में सन्तुलन स्थापित नहीं कर पा रहे हैं। कोई अर्थ शक्ति (धन) जोड़ने में बुरी तरह से पिल पड़ा है, रात दिन उसी में रचा पचा रहता है, तो कोई शरीर बल को ही सब कुछ मान बैठा है शरीर की चिन्ता में अन्य आवश्यक शक्तियों का निरादर करके स्वयं को अशान्त बनाये हुए हैं। कोई यदि मात्र बुद्धि के बर्धन के लिए प्रयत्नशील है तो कोई कामशक्ति के वर्धन के लिए रसायन-बाजीकरण का, अपचकारी पौष्टिक आहारों का लोलुप बना हुआ है। उनके झूठे व्यामोह में पड़कर अधिकाधिक वीर्य क्षरण करता हुआ अपने को दीन हीन, मलीन और रोगग्रस्त बना रहा है। ये एकांकी साधनायें सम्पूर्ण शक्ति का, शक्ति की समग्रता का तिरस्कार है। इसी कारण सुख के लिए

की जानेवाली हमारी सारी दौड़धूप हमें व्यस्त और व्यग्र बनाये हुए हैं। महाशक्ति का समग्र-अवतरण ही हमें पूर्णकाम बना सकता है। अतः सर्वतोमुखी गायत्री की सर्वतोभावेन उपासना हम सबको करनी चाहिए। तभी अक्षय सुख, तेज, ओज, प्रफुल्लता हमें प्राप्त हो सकेगी।

न गायत्र्याः परो धर्मः न गायत्र्याः परन्तपः।
न गायत्र्याः समो देवः न गायत्र्या समा शक्ति।।

अर्थात् गायत्री से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। गायत्री से बढ़कर कोई तपस्या नहीं है। गायत्री के समान अन्य कोई देवता भी नहीं है। गायत्री से बढ़कर कोई शक्ति नहीं है।

गायत्र्या परमं नास्ति देवि चेह न पावनम्।
हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे।।

नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु इस पृथ्वी तथा स्वर्ग में और कोई नहीं है।

जपतां जुह्वतां चै विनिपातो न विद्यते।

गायत्री जप और हवन करते रहने वाले का कभी विनिपात नहीं होता है। अन्य क्रियाओं के अनुष्ठान में यदि भूल-चूक रह जावें, तो उनका उल्टा फल भुगतना पड़ता है, किन्तु गायत्री की साधना प्रत्यवाय दोष (उलटा फल रूप दोष) से रहित है।

सा हैषा गायत्री गयांस्तत्रे। प्राणाः वै गयासे। तत् प्राणाँ स्तत्रे तद् यद् गयांस्तत्रे, तस्माद् गायत्री नाम।

(शतपथ ब्राह्मण)

वह गायत्री तो प्राणों का त्राण करने वाली हैं उपासना करने वाले के प्राण को निर्मल एवं समर्थ बनाती है, इसी से गायत्री कहलाती है।

गायत्री शब्द का नामकरण उसके क्रिया कलाप एवं स्वभाव को ध्यान में रखकर ही किया गया है। इस महाशक्ति के साथ सम्बन्ध होने की प्रथम प्रतिक्रिया यह होती है कि साधक का प्राण-प्रवाह शून्य से बिखरना रुक जाता है और उसका ऐसा संरक्षण होता है जिससे कोई महत्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध किया जा सके। वर्षा का जल नदी-नालों में बहता हुआ यों ही अस्त हो जाता है, पर यदि उसे बाँध लगाकर रोका जा सके तो सिचाई, विद्युत् उत्पादन आदि कई कार्य सिद्ध हो जाते हैं। गायत्री उपासना प्राण-क्षरण को रोकती है, उसकी रक्षा करती है और इस संरक्षण से लाभान्वित उपासक दिन दिन प्रगति पथ पर अग्रसर होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए उस महती शक्ति का नाम-गुण और प्रभाव के अनुरूप तत्वदर्शी मनीषियों ने 'गायत्री' रक्खा।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से गायत्री शब्द दो पटों से मिलकर बना है—गय+त्री। 'गय' का अर्थ प्राण और 'त्री' का अर्थ त्राण करने वाली है।

गयाः प्राणा उच्यन्ते। गयान् प्राणान् त्रायते सा गायत्री।

अथवा

गायत त्रायते इति वा गायत्री प्रोच्यते। तस्माद् गायन्त त्रायते यतः।

इस तरह गायत्री के शब्दार्थ से प्रकट है कि यह मनुष्य में सन्निहित प्राण तत्व का अभिवर्धन उन्नयन करने की विद्या है। वह प्राणों की रक्षा करती है। उसकी उपासना से जीवन प्राणावान बनता है। वह उपासक का परित्राण करती है। विविध तापों से बचाती है।

गायत्री को 'तारक' भी कहते हैं। साधना ग्रन्थों में उसका उल्लेख इसी नाम से ज्ञात हुआ है। 'तारक' अर्थात् पार करने वाला। तैराकर पार निकाल देने वाला। गहरे जल प्रवाह को पार करने निकल जाने को डूबते हुए को बचा लेने को तारना कहते हैं। यह भवसागर ऐसा ही है जिसमें अधिकांश जीव डूब रहे हैं। तैरते तो कोई बिरले ही हैं। जिसकी साधना से तैरना सम्भव है, उसे 'तारक' कहा जाता है। गायत्री में यह सामर्थ्य है, उसी से उसे 'तारक-मन्त्र' कहा जाता है। गायत्री का माहात्म्य वर्णन करते हुए ऋषियों ने उसे इसीलिए यह नाम दिया है कि वह साधक को नरक से उबार सकती है। कष्टकर और खेदकर परिस्थितियों से पार कर सकती है।

जिनको दुर्बलताओं ने घेर रखा है उनके लिए पग-पग पर दुःख दारिद्र्य-भरा नरक ही प्रस्तुत रहता है। संसार में उन्हें कुछ भी आकर्षण एवं आनन्द दिखाई नहीं पड़ता। अपनी ही तृष्णायें, अपनी वासनायें बन्धन चुनकर रोम-रोम को जकड़े रहती हैं और बन्दी जीवन की यातनायें सहन करते रहने को बाध्य करती हैं। चूँकि ये परिस्थितियाँ हमारी अपनी निर्मित होती हैं, दुर्बलताओं का प्रतिरोध न करके हमने स्वयं ही उन्हें अपने ऊपर शासन करने के लिए आमन्त्रित किया होता है, अतः उसका उत्तरदायित्व

भी अपने ही ऊपर है। जब हम मानवोचित पुरुषार्थ अपनाकर प्राण प्रतिष्ठा के लिए तत्पर होते हैं, गायत्री उपासना का सर्वतोभावेन आश्रय लेते हैं, तो ये परिस्थितियाँ बदल जाती है और हम तैर कर पार होने लगते हैं। अतः स्पष्ट है, जो गायत्री की शरण पकड़ेगा, उसे भव बन्धनों से, उसे भव सागर से, नरक से उबरने में देर न लगेगी। यह महाशक्ति उसे गिरने से पस्त हिम्मत होने और डूबने से बचा लेगी तथा पार उतरने के सभी उपक्रम दिशा-दर्शन और अनुकूल व्यवस्था के सारे इन्तजाम पद-पद पर प्रस्तुत करती चलेगी।

वेदों, उपनिषदों, तन्त्र ग्रन्थों, स्मृतियों और पुराणों में गायत्री की महिमा का बड़े विस्तार के साथ उल्लेख मिलता है। चारों वेदों में गायत्री की आवृत्ति छत्तीस बार हुई। छत्तीस बार यह मन्त्र वेदों में आया है। ग्रन्थ के ग्रन्थ गायत्री के माहात्म्य पर लिखे गये हैं। आज भी लिखे जा रहे हैं और आगे भी लिखे जाते रहेंगे। फिर भी उसकी अनन्त शक्तियों का इति इत्थम् न हो सका है। और न कभी हो पायेगा। गायत्री की रुचि प्रकृति कैसी है। उसका गुण-तत्व क्या है? उसकी लीलाओं का रहस्य क्या है? उससे सम्बन्ध स्थापित करके मनुष्य कितने प्रकार के लाभ प्राप्त कर सकता है? इसकी पूरी-पूरी गणना कर सकना अशक्त जान कर प्राचीन काल के तत्वदर्शियों ने गायत्री के एक हजार नामों में उन्हें बड़ी विद्वता के साथ गुम्फित किया है। उनका यह प्रयास मधु मक्खी की तरह का है। जिस प्रकार मधु मक्खी पुष्प-पुष्प में सुवासित रस चूस-चूसकर मधु का संचय करती है, उसी प्रकार भारतीय तत्व वेत्ताओं ने मनुष्य मात्र के लिए उपयोगी प्रत्येक

तत्व का इन नामों में बड़ी कुशलता और सफलता के साथ चलन किया है। जिस प्रकार योग्य वैज्ञानिक जड़ी-बूटी का विश्लेषण करके उनके भीतर पाये जाने वाले पदार्थों, क्षारों, विटामिनों और गुणों की व्याख्या बड़ी बुद्धिमता के साथ तकनीकी शब्दों में करता है ठीक उसी प्रकार 'गायत्री सहस्रनाम' का एक-एक तकनीकी (Technical) है। सरल से सरल नाम भी अपने गर्भ में गूढ़ार्थ संजोये हुए है। प्रत्येक नाम अपने में पूर्ण है। अपने साथ आलोक एवं सन्देश लिए हुए है।

गायत्री सहस्रनाम का महत्व पाठ-पारायण की दृष्टि से तो है ही, उसके इंगन, प्रेरण, तथ्य दर्शन और भाव-भूमिका के अवलम्बन अनुसरण का अकूत प्रभाव हैं। उसमें लिखे गायत्री के हजार नाम तत्वों, तथ्यों, गुणों, बोध प्रबोधों, प्रभावों और विशे षताओं का विश्लेषण है। ऊपर यदि हम ध्यान दें तो पता चलेगा कि गायत्री की कितनी बड़ी महत्ता है। गायत्री सहस्रनाम के नामों के विचार करने से हम सहज ही अनुभव करेंगे कि वे पाठ करने के साथ-साथ मननीय, धारणीय, और अनुकरणीय भी है। ज्यों-ज्यों हमारा पाठ भावपूर्ण या गम्भीर होगा त्यों-त्यों हम देखेंगे प्रत्येक नाम हमसे कुछ कह रहा है। पद-पद पर हमारा मार्ग-दर्शन कर रहा है। एक-एक नाम हमारे अन्दर उमंग, उत्साह, आशा, आत्मविश्वास, मनः शान्ति और प्रफुल्लता भर रहा है। ज्यों-ज्यों हमारा पाठ गहन होता जाएगा, त्यों-त्यों हम अनुभव करेंगे कि हमारे सोचने-विचारने और काम करने का स्तर उत्तरोत्तर ऊपर उठता जा रहा है, भ्रान्तियाँ मिट रही हैं, अन्ध विश्वास टूट रहे हैं। और कालुष्य कार्पण्य घुलता जा रहा है। रुचियों का उन्नयन,

भावों का परिष्कार, आदतों का सुधार और माँ गायत्री का अप्रतिम प्यार पाकर आप निहाल हो जावेंगे।

गायत्री की कृपा पाने के लिए गायत्री सहस्रनाम का पाठ बड़ा उपयोगी है। अपने पाठ को जैसे भावपूर्ण और विचार पूर्ण बनावेंगे, वैसे-वैसे आप सिद्धि की ओर बढ़ते जावेंगे। घास छीलने जैसे, तोता रटन्त पाठ की अपेक्षा मनन पूर्ण पाठ त्वरित सिद्धि देने वाला है। यहाँ गायत्री सहस्रनाम का मूलपाठ व उनके अर्थ दिये जा रहे हैं। परम श्रद्धा और भावना से पाठ तो करना ही चाहिए। उसके साथ अर्थों पर गम्भीर दृष्टि से विचार भी करना चाहिए। तभी गायत्री तत्वज्ञान का व्यापक अध्ययन हो सकेगा।

मूल पाठ व अर्थ

भगवन्सर्वधर्मज्ञसर्वशास्त्रविशारद।
श्रुतिस्मृतिपुराणानां च रहस्यं त्वन्मुखाच्छ्रुतम्।।१
सर्वपापहरं देव येन विद्या प्रवर्तते।
केन वा ब्रह्मविज्ञानं किं नु वा मोक्षसाधनम्।।२
ब्राह्मणानां गतिः केन केन वामृत्युनाशनम्।
ऐहिकामुष्मिकफलं केन वा पद्मलोचन।।३
वक्तुमर्हस्यशेषेण सर्व निखिलमादितः।
साधु साधु महाप्राण सम्यक् पृष्टं त्वयाऽनघ।।४
शृणु वक्ष्यामि यत्नेन गायत्र्यष्टेसहस्रकम्।
नाम्नां शुभानां दिव्यानां सर्वपापविनाशनम्।।५
स्रष्ट्यादौ यद् भगवता पूर्व प्रोक्तं ब्रवीमि ते।

अष्टोत्तरसहस्रस्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः।।६

छन्दोऽनुष्टुप्तथा देवा गायत्री देवता स्मृता।

हलो बीजानि तस्यैव स्वराः शक्तय ईरिताः।।७

नारदजी बोले हे भगवान् ! सर्वधर्मों के ज्ञाता नारायण ! हे सर्वशास्त्र विशारद ! मैंने आपके सुख से श्रुति, स्मृति और पुराणों के रहस्यों को सुना है।१। जो कि सभी पापों के हरण करने वाले और विद्या के प्रवर्त्तक हैं। हे देव ! अब यह बताइये कि ब्रह्मज्ञान और मोक्ष-साधन की प्राप्ति किसके द्वारा हो सकती है?।२। कौन-कौन सा अनुष्ठान मृत्यु का नाशक और ब्राह्मणों को गति प्रदान करने वाला है और किसके द्वारा इहलोक और परलोक में सुख रूप श्रेष्ठ फल प्राप्त हो सकता है।२। हे कमलाक्ष ! यह सभी विषय मुझे पूर्ण रूप से समझाइये। नारायण बोले—हे अनघ ! हे महाप्राज्ञ ! तुम धन्य हो, जो ऐसा उत्तम प्रश्न किया है।४। अब मैं गायत्री सहस्रनाम कहता हूँ, उसे सुनो। दिव्य नाम शुभ पापों को नष्ट करने वाले हैं।५। सृष्टि में आदि में जिनका प्रतिपादन किया था, उन्हीं एक सहस्र आठ नामों को सुनाता हूँ। इस स्तोत्र के ऋषि भी बताये जाते हैं।६। इसका छन्द अनुष्टुप, देवता गायत्री, हलन्त अक्षर बीज और स्वर ही शक्ति है।७।

अङ्गन्यासकरन्यासावुच्येते मातृकाक्षरैः।

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हिताय वै।।८

रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां।

रक्तां रक्तनवस्रजं मणिगणैर्युक्ताँ कुमारीमिमाम्।

गायत्रीं कमलासनां करतल व्यानद्धकुण्डांदुजा।
पद्माक्षीं वरस्त्रजं च दधतीं हंसाधिरूढां भजे।।९
अचिन्त्यलक्षणाव्यक्ताप्यर्थमातृमहेश्वरी।
अमृतार्णवमध्यस्थाऽप्यजिता चापराजिता।।१०
अणिमादिगुणाधाराऽप्यर्कमंडलसंस्थिता।
अजराऽजाऽपराऽधर्मा अक्षसूत्रधराऽधरा।।११

मातृका मन्त्र के छः अक्षर इसके छः अंगन्यास और करन्यास कहे गये हैं। अब साधकों का हित साधन करने के लिए मैं ध्यान कहता हूँ।७। रक्त, श्वेत, पीत, नील और धवल वर्णों वाली, तीन उज्जवल नेत्रों वाली, लाल वर्ण के देह वाली और लाल पद्ममाल से सुसज्जित कण्ठ वाली हैं। मणियों को धारण किये हुये कुमारी गायत्री कमल के आसन पर प्रतिष्ठित तथा हाथों में कमल, कुण्ठिक, वर और अक्षमाला धारणी, हँसारूढ़ा भगवती की मैं उपासना करता हूँ।९। अब उनके नाम सुनो अचिन्त्यलक्षण (चिन्तन में न आने वाली) अव्यक्ता (वोध से परे) अर्थमातृमहेश्वरी (अर्थादि भौतिक पदार्थों को उत्पन्न करने वाली और उसके नियंत्रक देवताओं की भी स्वामिनी), अमृता (विनष्ट न होने वाली), अर्णवमध्यस्था (समुद्र निवासिनी), अधिता (जो जीती न जा सके), अपराजिता (न हारने वाली), अणिमादि-गुणाधारा (अणिमादि सिद्धियों की आधार भूता) अर्कमण्डलसंस्थिता (सूर्यमंडल में स्थित रहने वाली) अजरा (वृद्धावस्था रहित), अजा (जन्म-रहित) अक्षसूत्रधरा (ब्रह्मसूत्र धारिणी) अधरा (जो किसी अन्य की आश्रिता नहीं है।१०—११।

आकारादिक्षकारांताप्यरिषड्वर्गभेदिनी।
अंजनादिप्रतीकाशाऽप्यंजनाद्रि निवासिनी।।१२
अदितिश्चाजपा विद्याऽप्यरविन्दनिभेक्षणा।
अन्तर्बहिः स्थिताऽविद्याध्वंसिनी चांतरात्मिका।।१३
अजा चाजमुखाऽवासाऽप्यरविंदनिभानना।
अर्धमात्रार्थ दानज्ञाऽप्यरिमंडलमर्दिनी।।१४
असुरघ्नी ह्यमावस्याऽप्यलक्ष्मीघ्नन्यत्यजार्चिता।
आदिलक्ष्मीश्चादिशक्तिराकृतिश्चायताननना।।१५
आदित्यपदवीचाराऽप्यपरिसेविता।
आचार्यावर्तनाचाराप्यादिमूर्तिनिवासिनी।।१६

अकारादिक्षकारान्ता (आदि में अकार और अन्त में क्षकार संयुक्ता), औरषड्वर्गभेदिनी (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं मात्सर्यरूप छः शत्रुंओं को नष्ट करने वाली) अंजनादिप्रतीकाशा (अंजन गिरि के आन्तरिक वर्ण वाली), अंजनाद्रि निवासिनी (अंजनगिरि पर रहने वाली) अदिति (देवमाता) अजपान अपने से भी शुभ कर्मियों पर कृपा करने वाली, अविद्या (अविद्या की भी आश्रयदात्री) अरविन्दनिभेक्षणा (कमल जैसे नेत्रों वाली), अन्तर्बहिःस्थिता (जीवों के अन्तर और बाहर निवास करने वाली), अविद्याध्वंसिनी (अविद्या को नष्ट करने वाली) अन्तरात्मिका (प्राणियों की आत्मा स्वरूपा), अजा (जिसका कभी जन्म न हो), अजमुखावासना (ब्रह्म के मुख में स्थिता), अरविन्दगिभानगा (कंमल जैसे मुख वाली), अर्धमात्रा (प्रणव का जंगभूता अर्धमात्रा रूपिणी) अर्थदानज्ञा (पुरुषार्थ-दान की ज्ञाता) अरि मण्डलमर्दिनी

(शत्रु समाज का मर्दन करने वाली), असुरघ्नी (असुर विनाशिनी), अमावस्या (अमारूपिशी) अलक्ष्मीघ्नन्यत्यजार्चिता (अलक्ष्मी का नाश करके पूजित होने वाली) आदिलक्ष्मी (ब्रह्म-मूर्ति स्वरूपा) आदि शक्ति सृष्टि के आदि में स्थित शक्ति), आकृति (साकार रूपा), आयताननना (अट्टहास मुखवाली), आदित्यपदवीचारा (सूर्यमार्गगामिनी) आदित्य परिसेविता (सूर्य द्वारा उपासिता), आचार्या सर्वज्ञानमयी, आवर्तना (जन्म-मरण युक्त संसार को रचने वाली), आचारा (आचार स्वरूपा) आदिमूर्तिनिवासिनी (ब्रह्म में स्थिता) ।१२–१६ ।

आग्नेयी चामरी चाद्या चाराध्या चासनस्थिता।
आधारनिलयाधारा चाकाशान्तनिवासिनी।।१७
आद्याक्षरसमायुक्ता चान्तराकशरूपिणी।
आदित्यमंडलगता चांतरध्वांतनाशिनी।।१८
इन्दिरा चेष्टदा चेष्टा चैंदीवरनिभेक्षणा।
इरावती चेंद्रपदा चेंद्राणी चेंदुरूपिणी।।१६
इक्षुकौदण्डसंयुक्त चेषुसंधानकारिणी।
इन्द्रनीलसमाकारा चेडापिंगलरूपिणी।।२०
इन्द्राक्षी चेश्वरी देवीं चेहात्रयविवर्जिता।
उमा चोषाह्युडुनिभा उर्वारुकफलानना।।२१

आग्नेयी (अग्नि रूपिणी) आमिरी (अमर रहने वाली) आद्या (सृष्टि से पूर्व भी स्थिता) आराध्या (सबके द्वारा आराधन की जाने वाली) आसनस्थित (श्रेष्ठ आसन पर विराजमान) आधारनिलया (मूलाधार में प्रतिष्ठिता) आधारा (आश्रयभूता)

आकाशान्तनिवासिनी (आकाशतत्व के अन्तरूप अहंकार में रहने वाली) आद्याक्षरसमायुक्ता (आदि अक्षर अकार से सम्पन्न) अन्तराकाशरूपिणी (अन्तरिक्ष आकाश के रूप वाली, आदित्यमण्डलगता (सूर्यमण्डल में सुशोभिता), इन्दिरा (लक्ष्मी स्वरूपा इष्टदा कामनाओं की दात्री) इष्टा (इष्टदेवी) इन्दीवरनिभेक्षणा (श्रेष्ठ कमल जैसे लोचन वाली), इरावती (पृथ्वी से सम्पन्ना) इन्द्रपदा (इन्द्र पद को प्राप्त करने वाली) इन्द्राणी (शशी रूप में स्थिता) इन्दुरूपिणी (चन्द्रमा जैसी उज्जवल) इक्षुकोदण्डसंयुक्ता (ईख का दण्ड धारण किये हुए) इष्युसंधानकारिणी (शर संधान करने में निपुण) इन्द्रनीलसमाकार (इन्द्रनील मणि के समान आकृति वाली) इडापिंगल-रूपिणी (इडा और पिंगला नाड़ियों के रूप में स्थित), इन्द्राक्षी (सौ नेत्र वाली), ईश्वरी, ईहात्रयविवर्जिता (तीनों एषणाओं से मुक्त), उमा, उषा, उडुनिभा (नक्षत्र जैसी दमकती हुई) उर्वारुक फलानना (ककड़ी फल जैसे मुखवाली) ।१७–२१।

उडुप्रभा चोडुमतीह्युडपा उडुमध्यगा।
ऊर्ध्व चाप्यूर्ध्वकेशी चाप्यूर्ध्वाधागतिभेदिनी।।२२
ऊर्ध्वबाहुप्रिया चोर्मिमालावाग्ग्रन्थदायिनी।
ऋतंचर्षि ऋतुमती ऋषिदेवनमस्कृता।।२३
ऋग्वेदा ऋणहर्त्री ऋषिदेवनमस्कृता।।२३
ऋग्वेदा ऋणहर्त्री च ऋषिमण्डलचारिणी।
ऋद्धिदा ऋजुमार्गस्था ऋजुधामौऋतुप्रदा।।२४
ऋग्वेदनिलया ऋज्वी लुप्तधर्मप्रवर्तिनी।

लूतारिवरसंभूता लूतादिविषहारिणी।।२५
एकाक्षरा चैकमात्रा चैका चैकेकनिष्ठिता।
ऐन्द्री ह्यैरावतारूढ़ा चैहिकामुष्मिकप्रदा।।२६

उडुप्रभा (जल जैसे वर्ण वाली) उडुमती (रात्रि जैसे रूप वाली) उडुपा (चन्द्ररूपा) उडुमध्यगा (नक्षत्र मण्डल में स्थिता) ऊर्ध्व (सर्वान्नता) ऊर्ध्वकेशी (ऊँचे केश वाली) ऊर्ध्वाधोगतिभेदिनी (उर्ध्व और अधः लोक की गति भेदिनी अर्थात् आवागमन नष्ट करने वाली) ऊर्ध्वबाहुप्रिया (बाहु ऊँचे करके स्तुति करने वालों पर प्रसन्न होने वाली), ऊर्मिमालावाग्ग्रन्थदायिनी (तरङ्गों से युक्त वाणियों को ग्रन्थ रूप में परिणित करने वाली) ऋतम् (सत्य वाणी रूपा ऋषि) (वेद स्वरूपा) ऋतुमती (ऋतुओं की प्ररेणा करने वाली) ऋषिदेवनमस्कृता (ऋषियों और देवताओं से वन्दिता) ऋग्वेदा (ऋग्वेद रूपिणी) ऋणहर्त्री (तीनों ऋणों को नष्ट करने वाली), ऋषि मण्डलचारिणी (ऋषि समाज में विचरण करने वाली), समृद्धिदा, यजुमार्गस्था सीधे मार्ग वाली) ऋजुधर्मा (सरल धर्म वाली) ऋतुप्रदा (समय पर ऋतुओं की प्रेरिका) (लोप हुए धर्म को पुनः प्रकट करने वाली), लूतारिवरसंभूता (विशिष्ट रोग नाशक मन्त्रों को प्रकट करने वाली) लूतादिविषहारिणी (विषैले जन्तुओं का विष हरण करने वाली) एकाक्षरा, एकमात्रा, एक (बेजोड़) एकैकनिष्ठिता (एक निष्ठा वाली) ऐन्द्री (इन्द्र की शक्ति) ऐरावतारूढ़ा (ऐरावत पर सवार होने वाली) ऐहिकामुष्मिकप्रदा (इहलोक और परलोक का फल देने वाली) ।२२-२६।

ओंकारा ह्योषधी चोता चोतप्रोतनिवासिनी।
और्वा ह्यौषधसंपन्ना औपासनफलप्रदा।।२७
अण्डमध्यस्थिता देवी चाकारमनुरूपिणी।
कात्यायनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुन्दरी।।२८
कमला कामिनी कांता कामदाकालकंठिनी।
करिकुम्भस्तनभरा करवीरसुवासिनी।।२९
कल्याणौ कुण्डलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी।
कुरुविददलाकारा कुण्डली कुमुदालया।।३०
कालजिह्वा करालास्या कालिका कालरूपिणी।
कमनीयगुणा कांतिः कलाधारा कुमुद्वती।।३१

ओंकारा, औषधि, ओता मणि में सूत्र के समान सब जीवों में विद्यमान, ओतप्रोतनिवासिनी (ब्रह्ममयी होकर विश्व में निवास करने वाली), ओर्वा (वाड़वाग्नि, औषधसम्पन्ना, औपासनफलप्रदा उपासना का फले देने वाली) अण्डमध्यस्थिता (ब्रह्माण्ड में स्थित), अकार मनरूपिणी (जिनकी मन्त्रमय विग्रह विसर्ग रूप है), कात्यांयनी (कात्यायन ऋषि द्वारा उपासिता, कालंरात्रि, कामाक्षी, कामसुन्दरीककमला, कामिनी (शुभकामना वाली), कान्ता (ब्रह्म शक्ति) कामदा, कालकण्ठिनी (काल को कण्ठ में रख लेने वाली) करिकुम्भस्तनभरा (हाथी के कुम्भस्थल के समान वक्षस्थल वाली अर्थात् विशाल हृदया) करवीरसुवासिनी (महालक्ष्मी के नेत्रों में अवस्थिता) कल्याणी, कुण्डवती, कुरुक्षेत्र निवासिनी, कुरुविन्ददलाकारा (मुक्तादल जैसे आकार वाली) कुण्डली, कुमुदालया (कुमुद पर स्थित) कालजिह्वा, करालास्या (दुष्टों

के लिए विकराल) कालिका, कालरूपिणी, कमनीयगुणा (कोमल स्वभाव या अङ्ग वाली) कान्ति, कलाधारा (चौंसठ कला धारिणी) कुमुद्वती (कुमुद् से सुशोभित)।।२७–३१।।

कौशिकी कमलाकारा कामचारप्रभंजिनी।
कौमारी करुणापांगी ककुबंता करिप्रिया।।३२
केसरी केशवनुता कदंबकुसुमप्रिया।
कालिंदी कालिका कांची कलशोद्भवसंस्तुता।।३३
काममाता क्रतुमती कामरूपा कृपावती।
कुमारी कुण्डनिलया किराती कीरवाहना।।३४
कैकेयी कोकिलालापा केतकीकुसुमप्रिया।
कमण्डलुधरा काली कर्मनिर्मूलकारिणी।।३५
कलहंसगतिः कक्षा कृतकौतुकमंगला।
कस्तूरीतिलका कम्रा करीन्द्रगमना कुहूः।।१३६

कौशिकी, कमलाकारा, कामचारप्रभञ्जिनी (स्वेच्छार नाशिनी) कौमारी (कुमारी) करुणापांगी, ककुवन्ता (दिशाओं की अन्तरूपा) करि प्रिया (हाथियों पर प्रसन्न रहने वाली) केसरी (सिंह रूपिणी) केशवनुता (भगवान् कृष्णद्वारा नमस्कृत) कदम्बकुसुमप्रिया (कदम्ब पुष्पों से प्रसन्न होने वाली) कालिन्दी (यमुना स्वरूपिणी) कालिका, काँची (कांचीक्षेत्र में विद्यमान) कलशोद्भवसंस्तुता (महर्षि अगस्त्य द्वारा स्तुता), काममाता, क्रतुमती (यज्ञ स्वरूपा) कामरूपा (स्वेच्छारूप धारिणी) कृपावत कुमारी कुण्डनिलया (यज्ञकुण्ड में स्थित) किरात (किरातरूप धारिणी) कीरवाहना (तोता पर सवार होने वाली) कैकेयी (कैकेयी के समान

कोपरूपिणी) कोकिलालापा (कोयल जैसे स्वर वाली) केतकी, कुसुमप्रिया, कमण्डलुधरा, काली कर्मनिर्मूलकारिणी कर्मबंधन काटने वाली) कलहंसगति (राजहंस तुल्य गति वाली) कक्षा, कृतकौतुकङ्गला (मङ्गल देशधारिणी) कस्तूरीतिलका, कम्रा (स्फूर्तिमयी) करीन्द्रगमना (ऐरावत वाहिनी) कुहू (अमावस्या रूपिणी)।।३२–३६।।

कर्पूरलेपना कृष्णा कपिला कुहराश्रया।
कूटस्था कुधरा कम्रा कुक्षिस्थाखिलाविष्टपा।।३७
खड्गखेटकरा खर्वा खेचरी खड्गवाहना।
खट्वाग्धारिणी ख्याता खगराजोपरिस्थिता।।३८
खलघ्नी खंडितजरा खंडाख्यानप्रदायिनी।
खण्डेन्दुतिलका गंगा गणेशगुहपूजिता।।३६
गायत्री गोमती गीता गांधारी गानलोलुपा।
गोमती गामिनी गाक्षा गंधर्वाप्सरसेविता।।४०
गोविंदचरणाक्रांता गुणत्रयविभाविता।
गंधर्वी गह्वरो गोत्रा गिरीशा गहना गमी।।४१

कर्पूरलेपना, कृष्णा, कपिला, कुहाराश्रया (बुद्धि रूपी गुफा में आश्रय लेने वाली) कूटस्था (ब्रह्म में स्थित) कुथरा (पृथिवी को धारण करने वाली) कम्रा (सुन्दरी) कुक्षिस्थाखिलाविष्टपा (अपनी कुक्षि में स्थित विश्व की रक्षिका) खंगखेटकरा (ढाल तलवार धारणी) खर्वा (नाटे कद वाली) खेचरी (आकाश में गति प्रदान करने वाली) खगवाहना, खट्वाह्लधारिणी, ख्याता (प्रसिद्धा) खगराजोपरि स्थिता (गरुड़ की पीठ पर सवार) खलध्नी,

खंडितजरा (वृद्धावस्था रहित) खंडाख्यान प्रदायिनी (शास्त्रों को प्रकट करने वाली) खंडेन्दुतिलका (दौज के चन्द्रमा के समान तिलक वाली) गङ्गा, गणेशगुहपूजिता (गणेश और कार्तिकेय द्वारा पूजी हुई) गायत्री, गोमती, गांधारी, गानलोलुपा (संगीत प्रिया) गौमती, गामिनी (व्यापक रूप से पति करने वाली) गाक्षा (पृथिवी की आधार भूता) गंधर्वाप्ससेविता (गंधर्वों और अप्सराओं द्वारा सेवा प्राप्त) गोविन्दचरणाक्रान्ता (भगवान श्रीकृष्ण के चरणों से दबी हुई अर्थात् पृथिवी रूपिणी) गुणत्रयविभाविता (तीनों के सहित प्रकट हुई) गंधर्वी गह्वरी (गूढ़) गोत्रा (पृथिवी) गिरीशा (पर्वतों की अधिदेवी गहना रहस्यमयी) गमी (पर्यालोचन करने में निपुणा)।।३४–४१।

गुहावासा गुणवती गुरुपापप्रणाशिनी।
गुर्वी गुणवती गुह्यागोप्तव्या गुणदायिनी।।४२
गिरिजा गुह्यमातंगी गरुडध्वजवल्लभा।
गर्वापहारिणी गोदा गोकुलस्या गदाधरा।।४३
गोकर्णनिलयासक्ता गुह्यमण्डलवर्तिनी।।४४
घृणिमन्त्रमयी घोषा धनसंपातदायिनी।
घन्टारवप्रिया घ्राणा घृणिसंतुष्टंकारिणी।।४५
घनारिमंडला घूर्णा घृणाची घनवेगिनी।
ज्ञानधातुमयी चर्चा चर्चिता चारुहासिनी।।४६

गुहावास, गुणवती, गुरुपापप्रणाशिनी (बड़े-बड़े पापों को नष्ट करने वाली) गुर्वी (सब से ऊपर प्रतिष्ठित) गुणवती, गुह्या, गौप्तव्या (गुप्तधन के समान हृदय में छिपी हुई) गुणदायिनी

गिरजा, गुह्यमातङ्गी गरुडध्वज बल्लभा गर्वांपहारिणी, गोदा (गौ या पृथिवी के देने वाली) गोकुलस्था (गोवंश-समूह में स्थित) गदाधरा, गोकर्णनिलयासक्ता (गोकर्ण क्षेत्र में निवास करने वाली) गुह्यमण्डलवर्तिनी घर्मदा (सूर्य किरणों के रूप में उष्णता देने वाली) घनदा (मेघदात्री अर्थात् वर्षा करने वाली) घंटा (घंटा रूपिणी) घोरदानदमर्दिनी, घृणिमन्त्रमयी (सूर्य मन्त्र से सम्पन्न) घोषा (शब्दमयी) घन्सम्पातदायिनी (मेघों का प्रेरण करने वाली) घण्टारवप्रिया (घण्टा बजने से प्रसन्न होने वाली) घ्राणा (घ्राणेन्द्रिय रूपा) घृणिसंतुष्टकारिणी (सूर्य को प्रसन्न करने वाली) घनारिमण्डला (शत्रुओं के विशाल सैन्य समूह में कूद कर युद्ध करने वाली) घूर्णा (भ्रमणशील) घृताखी (रात्रिकी अधिष्ठात्री) घनवेगिनी (महान् वेग वाली) ज्ञानधातुमयी (ज्ञान रूप धातुओं से युक्त) चर्चा (धर्म कथाओं में स्थित) चर्चिता (सुगन्धित अनुलेपनों से चर्चित हुई) चारुहासिनी।४२–४६।

चटुला चंडिका चित्रा चित्रमाल्यविभूषिता।
चतुर्भुजा चारुदंता चातुरी चरिंतप्रदा।।४७
चूलिका चित्रस्त्रांता चन्द्रमाकर्णकुण्डला।
चन्द्रहासा चारुदात्री चकोरी चन्द्रहासिनी।।४८
चन्द्रिका चन्द्रधात्री च चौरी चौरा च चण्डिका।
चंचद्वाग्वादिनी चन्द्रचूड़ा चोरविनाशिनी।।४६
चारुचन्दनलिप्तांगी चंचच्चामरवीजिता।
चारुमध्या चारुगतिश्चन्दिला चन्द्ररूपिणी।।५०
चारुहोमप्रिया चार्वाचरिता चक्रबाहुका।

चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रमण्डलदर्पणा।।५१

चटुला (चंचला) चण्डिका चित्रा, चित्रा (अद्भुत रूप वाली) चित्रमात्य विभूषिता, चतुर्भुजा, चारुदंता (सुन्दर दाँतों वाली) चार्परी, चरितप्रदा चूलिका (सर्वोच्चपद वाली) चित्रवस्त्रान्ता (विचित्र वस्त्रों वाली) चन्द्रमा कर्णकुण्डला (चन्द्रकार कुण्डलों से सुशोभित) चन्द्रहासा, चारुदात्री, चकोरी, चन्द्रहासिनी, चन्द्रिका चन्द्रिधात्री चौरी (छिपी शक्ति वाली) चौरा (पाप हरण करने वाली,) चण्डिका चंचद्वागवादिनी (चंचलवाणी से युक्त) चन्द्रचूड़ा, चोर विनाशिनी (चोरों को नष्ट करने वाली) चारु चंदनलिप्तांगी (सुन्दर चंदन से चर्चित अङ्ग वाली) चंचच्चामरवीजिता (हिलते हुए चमर से सुशोभित), चारुमध्या (सुन्दर कटि वाली) चारुगति (श्रेष्ठ गति वाली) चंदिला (कर्नाटक देश में प्रसिद्ध देवी) चन्द्ररूपिणी, चारुहोमप्रिया (श्रेष्ठ हवन से प्रसन्न होने वाली) चार्वाचरिता (श्रेष्ठ आचरण वाली) चक्रबाहुका (चक्रधारिणी) चन्द्रमण्डल-मध्यस्था-चन्द्र-मण्डलदर्पण (चन्द्रमण्डल को दर्पण के समान कारण वाली)।।४७–५१।

चक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा चारुविलासिनी।
चित्स्वरूपा चन्द्रवती चन्द्रमाश्चन्दनप्रिया।।५२
चोदयित्री चिरप्रजा चातका चारुहेतकी।
छत्रछाया छत्रधरा छाया छन्दः परिच्छदा।।५३
छाया देवी छिद्रनखा छन्नेन्द्रियविसर्पिणी।
छन्दोऽनुष्टुप्प्रतिष्ठांता छिद्रोपद्रवभेदिनी।।५४

छेदा छत्रेश्वरी छिन्ना छुरिका छेदन प्रिया।

जननी जन्मरहिता जातवेदा जगन्मयी।।५५
जाह्नवी जटिलाजेत्री जरामरणवर्जिता।
जन्बूद्वीपवती ज्वाला जयन्ती जलशालिनी।।५६

चक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा (अद्भुत कर्म वाली) चारुविलासिनी चित्स्वरूपा (चिन्मयी) चन्द्रवती चन्द्रमा (चन्द्ररूपा) चन्दनप्रिया, चोदयित्री (प्रेरणा देने वाली), चिरप्रजा (सनातन बुद्धि) चातका (चातक के समान दृढ़) चारुहेतकी (श्रेष्ठ कारण रूपा) छत्रछाया (छत्र लगाकर चलने वाली) छत्रधरा छाया (ब्रह्म की छाया स्वरूपा) छन्दः परिच्छदा (छन्दमयी) छायादेवी छिद्रनखा छन्नेन्द्रियविसर्पिणी (इन्द्रियों को जीतने वाली साधकों के समक्ष प्रकट होने वाली) छन्दोऽनुष्टुप्प्रतिष्ठांता (अनुष्टुप् छन्द प्रतिष्ठित) छिद्रोपद्रवभेदिनी (उपद्रवों का शमन करने वाली) छेदा (पापों का उच्छेद करने वाली) छत्रेश्वरी (तीनों लोकों पर एक छत्र राज्य करने वाली) छिन्ना (छिन्नामस्तक स्वरूपा) छुरिका (दुष्टों के लिए छुरी के समान) छेदन प्रिया (हाथियों को छेदन करने वाली), जननी (विश्वमाता) जन्मरहिता, जातवेदा (अग्निस्वरूपा) जगन्मयी (संसार में व्याप्त) जाह्नवी, जटिला (गूढ़ रहस्य वाली) जेत्री (बिजयिनी) जरामरणवर्जिता जन्बूद्वीपवती ज्वाला जयन्ती जलशालिनी (जलमयी)।।५२–५७।

जितेन्द्रिया जितक्रोधा जितामित्रा जगत्प्रिया।
जातरूपमयी जिह्वा जानकी जगती जरा।।५७
जनित्री जह्नुतनया जगत्त्रयहितैषिणी।
ज्वालामुखी जपवती ज्वरध्नी जितविष्टपा।।५८

जिताक्रांतमयी ज्वाला जाग्रती ज्वर देवता।

ज्वलंती जलदा ज्येष्ठा ज्याघोषस्फोटदिङ्मुखी।।५६
जंभिनी जृम्भणा जृम्भा ज्वलन्माणिक्युकुण्डला।
झिंझिका झणनिर्घोषा झंझामारुतवेगिनी।।६०
झल्लरीवाद्यकुशला त्ररूपा त्रभुजा स्मृता।
टंकवाणसमायुक्ता टंकिनी टंकभेदिनी।।६१

जितेन्द्रियी, जितक्रोधा, जिता मित्रा (शत्रुओं को जीतने वाली), जगत्प्रिया (सम्पूर्ण विश्व से प्रेम करने वाली) जातरूपमयी, जिह्वा, जानकी, जगती, जरा (सांध्य संध्या में वृद्धारूप धारिणी) जनित्री, जह्नुतनया, जगत्त्रयहितैषिणीं, ज्वालामुखी, जपवतीं, ज्वरहनी, जितविष्टपा (संसार विजयिनी), जिताक्रान्तमयी, ज्वाला, जाग्रती (सदा) चैतन्य, ज्वरदेवता (ज्वरों की अधिष्ठात्री) ज्वलन्ती (प्रकाशमाना) जलदा (जल देने वाली) ज्येष्ठा, ज्याघोषस्फोटदिङ्मुखी (उसके धनुष की टंकार सर्वत्र सुनी जाती है) जंभिनी (दैत्यों का चर्वण करने वाली) जृम्भण (जँभाई मुद्रा वाली) जृम्भा, ज्वलन्माणक्य कुण्डला (प्रकाशमान मणिमय कुण्डलों से सुशोभित) झिंझिका (झींगुर जैसे जीवों से भी प्राण रूप से अवस्थित) क्षणनिर्घोणा (झंझारमयी) झंझामारुतवेगिनी (झंझावात के तुल्य भीषण वेग वाली) झल्लरी वाद्यकुशला (ढोलक बजाने में कुशल अथवा ढोलक की ध्वनि से प्रसन्न होने वाली) त्ररूपा बलीवर्द्ध स्वरूपिणी त्रभुजा (बलीवर्द्ध तुल्य भुजा वाली) टंकबाणसमायुक्ता (परशु और बाण धारिणी) (टंकोर करने वाली) टंकभेदिनी (शत्रुओं द्वारा की जाने वाली धनुषटंकार को नष्ट करने वाली)।।५७-६१।

टंकीगणकृताघोषा टंकनीयमहोरसा।
टंकारकारिणी देवि ठठशब्दनिनादिनी।।६२
डामरी डाकिनी डिभा डुंडुमारैकनिर्जिता।
डामरीतंत्रमार्गस्था डमड्डमरुनादिनी।।६३
डिडीरवसहा डिम्भलसत्क्रीडापरायणा।
ढुंढिविघ्नेशजननी ढक्काहस्ता ढिलिव्रजा।।६४
नित्ज्ञाना निरूपमा निर्गुणा नर्मदा नदी।
त्रिगुणा त्रिपदा तंत्री तुलसी तरुणा तरुः।।६५
त्रिविक्रमपदाक्रांता तुरीयपदगामिनी।
तरुणादित्यसंकाशा तामसी तुहिनातुरा।।६६

टंकीगणकृताघोषा (रुद्रगण के तुल्य गम्भीर घोष करने वाली), टंकनीय महोरसा (महान् बक्ष वाली) टंकारकारिणी, ठठशब्दनिनादनी (अट्टहास करने वाली), डामरी (तन्त्रविद्या), डाकिनी, डिभा (बालरूपिणी), डुंडुमारैकानर्जिता (डंडुमार नामक दैत्य को हराने वाली), डामरीतन्त्रमार्गस्था (डामरीतन्त्र के अनुष्ठान में प्रतिष्ठित), डमड्डमरुनादिनी (डमरू से डमडम शब्द करने वाली) डिण्डिरवसहा (डिण्डीवाद्य की ध्वनि सहन करने वाली) डिम्भलसत्क्रीडापरायणा (बालकों को खिलाने वाली), ढुढिविघ्नेशजननी (गणेश जी की जननी) ढक्काहस्ता (ढक्का संज्ञक वाले को हाथ में धारण किए हुए), ढिलिब्रजा (ढली नाम गणों को साथ रखने वाली), नित्यज्ञाना, निरुपमा, निर्गुणा नर्मदा, नदी (दिव्य सरिता रूपिणी), त्रिगुणा (तीनों गुणों में व्यक्त), त्रिपदा (तीन चरण वाली) तन्त्री (तन्त्रमयी), तुलसीतरुणातरु

(वृक्षों में तरुणी तुलसी रूपा), त्रिविक्रमपदाक्रान्ता (वामन भगवान के चरणों से आक्रान्त हुई पृथिवी रूपा) तुरीयपदगामिनी (चार चरणों चलने वाली) तरुणादित्यसंकाशा (तरुण सूर्य जैसे प्रचण्ड तेज वाली) तामसी (युद्ध में तामस रूप धारण धारिणी), तुहिना (चन्द्रकिरणों के समान शीतल), तुरा (द्रुतगति वाली) ।६३–६६।

त्रिकालज्ञानसंपन्ना त्रिवली च त्रिलोचना।
त्रिशक्तिस्त्रिपुरा तुंगा तुरंगवदना तथा।।६७
तिमिंगलगिला तीव्रा त्रिस्त्रोता तामसादिनी।
तंत्रमंत्रविशेषज्ञा तनुमध्या त्रिविष्टपा।।६८
त्रिसन्ध्या त्रिस्तनी तोषासंस्था तालप्रतापिनी।
ताटंकिनी तुषाराभा तुहिनाचलवासिनी।।६९
तंतुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया।
तिलहोमप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः।।७०
तारका त्रियुता तन्वी त्रिशंकुपिरिवारिता।
तलोदरी तिलाभूषा ताटंकप्रियवाहिनी।।७१

त्रिकालज्ञान सम्पन्ना, त्रिवली (त्रिवेणी) त्रिलोचना, त्रिशक्ति (इच्छा, क्रिया और ज्ञानशक्ति) त्रिपुरा, तुंगा (श्रेष्ठ विग्रह सम्पन्न) तुरगवदना (हयग्रीव भगवान की शक्ति रूपा), तिमिगिलगिला मत्स्यभक्षी तिमिगलको भी उर में रख लेने वाली, तीब्रा, तिस्त्रोता (त्रिधारा रूपा), तामसादिनी (अज्ञानांधकार का भक्षण करने वाली), तन्त्र मन्त्र विशेषज्ञा, तनुमध्वा, (पतली कटि वाली) किविष्टपा (स्वर्ग रूपा त्रिसन्ध्या), त्रिस्तनी (मलयध्वजापुत्री के रूप में उत्पन्न हुई) तोषा संस्था (सदैव सन्तुष्टा) तालव्रतापिनी

(ताली बजाकर शत्रुओं को भगाने वाली) तांटकिनी (धनुष की टंकार करने वाली) तुषाराभा (बरफ के समान उज्ज्वल कांति वाली) तुहिनाचलवासिनी (हिमालय पर निवास करने वाली) तन्तुजालसमायुक्ता (संसार में तन्तुजाल से व्याप्त) ताराहारावलि प्रिया, तीर्था (तीर्थ रूपा) तमाल कुसुमाकृति, तारका (तारने वाली) त्रियुता (तीन गुण वाली) तन्त्री (पतले देह वाली) त्रिशंकुपरिवारता (त्रिशंकु द्वारा इष्टदेवी रूप में वरण की गई) तलोदरी (पृथिवी जिनका उदर है) तिलपुष्प (तिलपुष्य जैसी आभावाली) ताटंकप्रियवाहिनी (कर्णफूलधारिणी) ।७१–७१।

त्रिजटा तित्तिरी तृष्णा त्रिविधा तरुणाकृतिः।
तप्तकांचनसंकाशा तप्तकांचनभूषणा।।७२
त्रैयंवका त्रिवर्गा च त्रिकालज्ञानदायिनी।
तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसी तुम्बुरुस्तुता।।७३
तार्क्ष्यस्था त्रिगुणाकारा त्रिभंगीतनुवल्लरिः।
थात्कारी थारवा थांता दोहिनी दीनवत्सला।।७४
दानवांतकरी दुर्गा दुर्गा सुरनिवहिणी।
देवरीतिर्दिवारात्रिद्रौपदी दुंदुभिस्वना।।७५
देवयानी दुरावासा दारिद्रयोद्भेदिनी दिवा।
दामोदरप्रिया दीप्ता दिग्वासादिग्विमोहिनी।।७६

त्रिजा (तीन बेणी वाली) तित्तिरी तित्त (तित्त रूप अव्यक्त ध्वनि करने वाली) तृष्णा (तृष्णा रूपिणी) त्रिविधा (तीन एक वाली) तरुण कृति, तप्तकंचनसंकाशा (तपे हुए सुवर्ण जैसे कांति वाली) तप्तकांचनभूषणा (तपे हुए स्वर्ण के आभूषणों से

सुशोभित) त्रैयम्बका (त्रिलोक माता) त्रिवर्गा (धर्म, अर्थ, काम रूपिणी) त्रिकालज्ञानदायिनी, तर्पण, तृप्तिदा, तृप्ता, तामसी (उग्र रूप वाली) तुम्बुरुस्तुता (तुम्बुरु से स्तुत हुई) तार्क्ष्यस्था (गरुडवाहिनी) त्रिगुणाकारा, त्रिभंगी, तंतुबल्लरि (लता के समान कोमल देहबाली) थात्कारी (युद्ध में थात् शब्द करने वाली) थान्ता (भय का नाश करने वाली) दोहिनी (कामधेनु रूपा) दीनवत्सला, दानवान्तकरी, दुर्गा दुर्गासुरनिवर्हिणी (दुर्ग नामक असुर का वध करने वाली) देवरीति (दिव्य पथ वाली) दिवारात्रि (दिन और रात्रि की अधिष्ठात्री) द्रौपदी, दुन्दुभिस्वना (दुन्दुभि जैसा घोष करने वाली) देवयानि, दुरवासा (दुर्गम आवास युक्त) दारिद्रयोद्भेदनी (दरिद्रतानाशिनी) दिवा (दिव्य) दामोदरप्रिया, दीप्ता दिग्वासा (दिशा रूपी वस्त्र वाली) दिग्विमोहिनी (दिशाभ्रम उत्पन्न करने वाली) ।७२–७६ ।

दंडकारण्यनिलया दंडिनी देवपूजिता।
देववंद्या दिविर्षदो द्वेषिणी दानवाकृतिः। ।७७
दीनानाथस्तुता दीक्षा दैवतादिस्वरूपिणी।
धात्री धनुर्धरा धेनुर्धारिणी धर्मचारिणी। ।७८
धुरन्धरा धराधरा धनदा धान्यदोहिनी।
धर्मशाला धर्माध्यक्षा धनुर्वेद विशारदा। ।७९
धृतिर्धन्या धृतपदा धर्मराजप्रिया ध्रुवा।
धूमावती धूमकेशी धर्मशास्त्रप्रकाशिनी। ।८०
नंदानंदप्रिया निद्रा नृनुता नंदनात्मिका।
नर्मदा नलिनी नीला नीलकण्ठसमाश्रया। ।८१

दंडकारण्यनिलया (दंडकारण्यवासिनी) दंडिनी (दंडमयी) देवपूजिता, देववद्या, दिविषदा (सुवर्ण वासिनी) द्वेषिणी (दुष्टों से द्वेष करने वाली) दानवाकृति (असुरों के लिए) दीनानाथस्तुता (दीनों और अनाथों से स्तुत्य) दीक्षा देवतादिस्वरूपिणी (देवताओं की आदिरूपा) धारी, धनुर्धरा धेनु (कामधेनु) धारिणी, धर्मचारिणी, धुरंधरा, धराधारा, धनदा, धान्यदोहिनी, धर्मशीला, धनाध्यक्षा, धनुर्वेदविशारदा, धृति, धन्या, धृतपदा (श्रेष्ठपद वाली) धर्मराजप्रिया, ध्रुवा, धूमावती, धूमकेशी, धर्मशास्त्र प्रकाशिनी, नन्दा (आनन्द रूपा) नन्दप्रिया (आनन्द इच्छुका) निद्रा, नृनुता (मनुष्यों द्वारा प्रणम्या) (नील वर्ण वाली) नीलकण्ठसमाश्रया (शिव की आश्रय भूता)।।७७—८१।।

नारायणप्रिया नित्या निर्मला निर्गुणा निधिः।
निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरंजना।।८२
नादबिन्दुकलातीता नादबिन्दुकलात्मिका।
नृसिंहनी नगधरा नृपनागविभूषिता।।८३
नरकक्लेशशमनी नारायणपदोद्भवा।
निरवद्या निराकारा नारद प्रियकारिणी।।८४
नानाज्योतिः समाख्याता निधिदा निर्मलात्मिका।
नवसूत्रधरा नीतिर्निरुपद्रवकारिणी।।८५
नन्दजा नवरत्नाढ्या नैमिषारण्वासिनी।
नवनीतप्रिया नारी नीलजीमूतनिस्वना।।८६

नारायणप्रिया, नित्या, निर्मला, निर्गुला, निर्मला, निधि, (सम्पत्ति) निराधारा (किसी का आश्रय न लेने वाली) निरूपमा, नित्यशुद्धा

निरंजना, नादबिन्दुकलातीता (नाद-बिन्दु-कला से परे) नादबिन्दुकलात्मिका (नाद-बिन्दु कला से सम्पन्न भी) नृसिंहनी, नगधरा (पर्वतों के धारण करने वाली) नृपनाग विभूषिता (नागराजरूपी भूषण से विभूषित नरक लेशमनी), नारायणपदोद्भव, निरनद्या (दोषरहित) निराकारा, नारदप्रियकारिणी, नानाज्योतिः समाख्याता (विभिन्न ज्योतियों के नाम से विख्यात) निधिदा, निर्मलात्मिका, नवसूत्रधरा, नीति, निरुपद्रवकारिणी (शान्त करने वाली) नन्दजा, नवरत्नाढ्या (नवरत्न सम्पन्न) नैमिषारण्यवासिनी, नवनीतप्रिय, नारी, नीलजीमूतनिस्वना (नील, भेष्ठ के समान गर्जने वाली) ।८२–८६ ।

निमेषिणी नदी रूपा नीलग्रीवा निशीश्वरी।
नामावलिर्निशुंभध्नी नागलोकनिवासिनी।।८७
नवजांबूनदप्रख्या नागलोकादिदेवता।
नूपुराक्रान्तचरणा नरचित्तप्रमोदिनी।।८८
निमग्नारक्तनयना निर्घातसमनिस्वना।
नंदनोद्यानानिलया निर्व्यूहोपचारिणी।।८९
पार्वती परमोदारा परब्रह्मात्मिका परा।
पंचकोशविनिर्मुक्ता पंचपातकनाशिनी।।९०
परचित्तविधानज्ञापंचिका पंचरूपिणी।
पूर्णिमा परमा प्रीतिः परतेजप्रकाशिनी।।९१

निमेषिणी (निमेष रूपा), नदीरूपा, नीलग्रीवा निशीश्वरी (रात्रि की अधिष्ठात्री) नामावली (असंख्य नाम वाली) निशुंभघ्नी, (नाग लोकनिवासिनी), नवजाम्बूनदप्रख्या (नवीन सुवर्ण जैसी

आभावाली) नागलोकादिदेवता, नूपुराक्रकान्तचरणा नरचित्तमोदिनी, निमग्नारक्तनयना (लाल नेत्र वाली) निर्घातसमनिस्वना (भयंकर शब्द वाली) नन्दनोद्याननिलया, निर्व्यूहोपचारिणी (व्यूह रहित विचरण करने वाली) पार्वती, परमोदारा, परब्रह्मात्मिका, परा, पंचकोशविनिर्मुक्ता (पाँच कोशों से रहित दिव्य रूपा) पंचपातकनाशिनी परचिद्य विधानज्ञा पराये (पराये चित्त की कामना जानने वाली) (पंचिका, पंचरूपिणी पूर्णिमा, परमा, प्रीति, परतेज, प्रकाशिनी) प्रकाश फैलाने वाली।८७—९१।

पुराणी पौरुषी पुण्या पुण्डरीकनिभेक्षणा।
पातालतलनिर्मग्ना प्रीतिः प्रीतिविवर्धिनी।।९२
पावनी पादसहिता पेशला पवनाशिनी।
प्रजापतिः परिश्रांता पर्वतस्तनमण्डला।।९३
पद्मप्रिया पद्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसंभवा।
पद्मपत्रा पद्मपदा पद्मिनी प्रियभाषिणी।।९४
पशुपाशविनिर्मुक्ता पुरंध्री पुरवासिनी।
पुष्कला पुरुषा पर्वा पारिजातकुसुमप्रिया।।९५
पतिव्रता पवितांगी पुष्पहासपरायणा।
प्रज्ञावतीसुता पौत्री पुत्रपूज्या पयस्विनी।।९६

पुराणी, पौरुषी, पुण्या, पुण्डरीकनिभेक्षणा (खिले कमल जैसे नेत्रों वाली) पातालतलनिर्मग्ना (पाताल में रहने वाली), प्रीति, प्रीतिवर्धिनी, पादसँहिता (चरणमयी) पेशला (सुन्दर) पवनाशिनी (वायुभक्षिका) प्रजापति (जीवों की स्वाभिमानी) परिश्रान्ता (रक्षा में व्यस्त) पर्वतस्तनमंडला, पद्म-प्रिया, पद्मसंस्था, पद्माक्षी,

पद्मसंभवा, पद्मपत्रा, पद्मपदा, पद्मिनी, प्रियभाषिणी, पशुपाशविनिनिर्मुक्ता (पाशविक पाश से मुक्त) पुरन्ध्री (स्त्री रूप से गृह कार्य करने वाली) पुरवासिनी, पुष्कला पुरुषा, पर्वा पारिजातकुसुमप्रिया, पतिव्रता, पवितांगी, पुष्पहासपरायण प्रज्ञावतीसुरा, पौत्री, पुत्रपूज्या, पयस्विनी ।।६२–६६।

पट्टिटपाशधरा पंक्तिः पितृलोकप्रदायिनी।
पुराणी पुण्यशीला च प्रणतार्तिविनाशिनी।।६७
प्रद्युम्नजननी पुष्टा पितामहपरिग्रहा।
पुण्डरीकपुरावासा पुण्डरीकसमानना।।६८
पृथुजंघा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी।
प्रवालशोभा पिंगाक्षी पीतवासाः प्रचापला।।६६
प्रसवा पुष्टिदा पुण्या प्रतिष्ठा प्रणवागतिः।
पंचवर्णा पंचवाणी पंचिका पंजरस्थिता।।१००
परमाया परज्योतिः परप्रीतिः परा गतिः।
पराकाष्ठा परेशानी पावनी पावद्युतिः।।१०१

पट्टिपाशधरा (पट्टिश-पाशधारिणी) पंक्ति, पितृलोकप्रदायिनी पुराणी, पुष्पशील, प्रणत, आर्तिनविनाशिनी, पुष्टा, प्रद्युम्न जननी, पिता मह, परिग्रहा, पुण्डरीकपुरावासा, पुण्डरीकसमानना (कमलमुखी) पृथुजङ्घा, (दीर्घ जाँघ) पृथुभुजा (दीर्घ भुजा) पृथुपादा (बृहत् चरण) पृथुदरी (विषाद उदर वाली) प्रवालशोभा, पिङ्गलाक्षी, पीतवासा, प्रचापला चंचल प्रसवा (विश्व को उत्पन्न करने वाली) पुष्टिदा, पुण्या प्रतिष्ठा प्रणवागति (प्रणव की मूलरूपा) पंचवर्णा, पंचवाणी, पंचिका (नाम) पंजरस्थिता (देहों में विकृमान)

परमाया, परज्योति, परप्रीति, (परम प्रीतिमयी) परागति, पराकाष्ठा (सर्वोत्कृष्ट) परेशानी, पावनी, पावक द्युति (अग्नि तुल्या तेज वाली) ।९०–१०१।

पुण्यभद्रा परिच्छेद्या पुष्पहासा पृथूदरी।
पीतांगी पीतवसना पीतशैय्या पिशाचिनी।।१०२
पीतक्रिया पिशाचघ्नी पाटलाक्षी पटुक्रिया।
पंचभक्षप्रियाचारा पूतनाप्राणघातिनी।।१०३
पुन्नागवनमध्यस्था पुण्यतीर्थनिषेविता।
पञ्चाङ्गी च परा शक्तिः परमाह्लादकारिणी।।१०४
पुष्पकण्ठस्थिता पूषा पोषिताखिलपिष्टपा।
पानप्रिया पंचशिखा पन्नगोपरिशायिनी।।१०५
पंचमात्रात्मिका पृथ्वी पथिका पृथुदोहिनी।
पुराणन्यायमीमांसापाटली पुष्पगंधिनी।।१०६

पुण्यभद्रा, परिच्छेद्या (विचित्र स्वभाव वाली) पुष्पहासा (खिले हुए पुष्पों जैसे हास्य वाली) पृथूदरी, पीतांगी, पीतवसना, पीतशैय्या, पिशाचिनी, पीतक्रिया (पान करने वाली) पिशाचघ्नी (पिशाचों का नाश करने वाली) पाटलाक्षी (खिले गुलाब जैसे नयन वाली) पटुक्रिया (कार्य निपुण) पंचभक्षप्रियाचारा (भोज्य, चर्व्य, चोष्य, लेह्य और पेश पाँच प्रकार के भोजन में रुचि रखने वाली) पूतनाप्राणघातिनी, पुन्नागवन मध्यस्था, पुण्यतीर्थनिषेविता, पंचागी, पराशक्ति, परमाह्लादकारिणी, पुष्पकाण्डस्थिति, पूषा (पोषणामयी, पोषिताखिलविष्टपा, पानप्रिया, पंचशिखा, पन्नगोपरिशायिनी, पंचमात्रात्मिका, पृथिवी, पथिका, पृथुदोहिनी, पुराणन्यायमीमांसा,

पाटली (गुलाब पुष्पधारिणी) पुष्पगन्धिनी ।१०१–१०६ ।

पुण्यप्रजा पारदात्री परमार्गैकगोचरा।
प्रवालशोभा पूर्णाशा प्रणवा पल्लवोदरी।।१०७
फलिनी फलदा फल्गुः फूत्कारी फलकाकृतिः।
फणीद्रं भोगशयना फणिमंडलमंडिता।।१०८
बालबाला बहुमता बालातपनिभांशुका।
बलभद्रप्रिया वंद्या वडवाबुद्धिसंस्तुता।।१०६
बंदीदेवी विलवती बडिशध्नी बलिप्रिया।
बांधर्बी बोधिता बुद्धिर्बंधूककुसुमप्रिया।।११०
बालभानुप्रभाकारा ब्राह्मी ब्राह्मणदेवता।
बृहस्पतिस्तुता वृंदा वृंदावनविहारिणी।।१११

पुण्प्रजा पारदात्री (पार लगने वाली) परमार्गैकगोचरा (श्रेष्ठ मार्ग से दर्शन देने वाली) प्रवालशोभा, पूर्णाशा, प्रणवा, (ओंकारमयी) पल्लवोदरी (कोमल उदर वाली) फलिनी फलदा, फल्गु, फूत्कारी, (क्रोध में फूत्कार करने वाली) फलाकृति, फणीन्द्र, भोगशयना (शेषशायिनी) फणिमंडिता, बालवाला, बालातपनिभांशुका (उदित सूर्य जैसी आभा वाली) बलभद्रप्रिया, वंद्या, वडवा, बुद्धिसंस्तुता, बंदीदेवी, विलवती (गुह्य निवासिनी) बडिशघ्नी (छिद्र दूर करने वाली) बलप्रिया, बांधवी, बोधिता, बुद्धि, बंधूककुसुमप्रिया (बंधूक पुष्प से प्रेम करने वाली) बालभानुप्रभाकारा, ब्राह्मी, ब्राह्मणदेवता, बृहस्पतिस्तुता, बृन्दावनविहारिणी ।१०७–१११ ।

बलाकिनी बिलाहारा विलवासा बहूदका।
बहुनेत्रा बहुपदा बहुकर्णावतंसिका।।११२
बहुबाहुयुता बीजरूपिणी बहुरूपिणी।
बिन्दुनादकलातीता बिंदुनादस्वरूपिणी।।११३
बद्धगोधांगुलित्राणा बदर्याश्रमवासिनी।
बृंदारका वृहत्स्कंधा वृहती वाणपातिनी।।११४
वृंदाध्यक्षा बहुनुता वनिता बहुविक्रमा।
बद्धपद्मासनासीना विल्वपत्रतलस्थिता।।११५
बोधिद्रुमनिजावासा बडिस्था बिदुदर्पणा।
बाला बाणासनवती बडवानलवेगिनी।।११६

बलाकिनी, बिलहारा, विलावासा, बहूदका (नदी जलस्वरूपा) बहुनेत्रा, बहुकर्णावतसिका, बहुबाहुयुता, बीजरूपिणी, बहुरूपिणी, बिन्दुनादकलातीता, बिन्दुनाद-स्वरूपिणा, बद्धगोधाङ्गुलित्राणा (गोधा चर्म का अंगुलित्राण धारिणी) बदर्याश्रमवासिनी, वृन्दारका, बृहत्स्कंधा, बृहती, बाणपातिनी, बृन्दाध्यक्षा बहुनुता (बहुतों द्वारा नमस्कृत्य) वनिता बहुविक्रमा, बुद्धपदमासनासीना, बिल्वपत्रतलस्थिता, बौधिद्रुमनिजावासा, (पीपल के नीचे निवासिनी) बडिस्था, बिंदुदर्पणा, बाला, बाणासनवती, बडवानलवेगिनी।११२—११६।

ब्रह्मांडबहिरंतःस्था ब्रह्मकंकणसूत्रिणी।
भवानी भीषणवती भाविनी भयहारिणी।।११७
भद्रकाली भुजंगाक्षी भारती भारताशया।
भैंरवी भीषणाकारा भूतिदा भूतिमालिनी।।११८

भामिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा।
भूतवासा भृगुलता भार्गवी भूसुरार्चिनी।।११६
भागीरथी भोगवती भवनस्था भिषग्वरा।
भामिनी भोगिनी भूषा भावनी भूरिदक्षिणा।।१२०
भर्गात्मिका भीमवती भवबंधविमोचनी।
भजनीया भूतधात्री रंजिता भुवनेश्वरी।।१२१
भुजंगवलया भीमा भेरुंडा भागधेयिनी।
माता माया मधुमती मधुजिह्वा मधुप्रिया।।१२२

ब्रह्माण्डबहिरंतःस्था (ब्रह्माण्ड मैं विद्यमान) ब्रह्मकंकणसूत्रिणी भवानी, भीषणवती, भाविनी, भयहारिणी, भद्रकाली, भुजंगाक्षी भारती भारताशया, भैरवी, भीषणाकारा, भूतिदा, भूतिमालिनी (ऐश्वर्य मयी) भामिनी, भोगनिरना, भद्रदा, भूरिविक्रमा (महापराक्रम वाली) भूतावास, (प्राणियों में निवास करने वाली) भृगुलता भार्गवती, भूसुराचिनी (ब्राह्मणों द्वारा पूजित हुई) भागीरथी, भोगवती, भवनस्था भिषग्वरा, भामिनी, भोगिनी, भाषा, भवानी भूरिदक्षिणा, भर्गात्मिका (तेजमयी) भीमवती (विशाल देह वाली) भववधविमोचिनी, भजनीया, भूतधात्री, रंजिता, भुवनेश्वरी, भुजगवलया, भागधेयिनी, माता माया मधुमती, मधुजिह्वा, मधुप्रिया।११७–१२२

महादेवी महाभागा मालिनी मीनलोचनी।
मायातीता मधुमती मधुमासा मधुद्रवा।।१२३
मानवी मधुसंभूता मिथिलापुरवासिनी।
मधुकैटभसंहर्त्री मेदिनी मेघमालिनी।।१२४
मंदोदरी महामाया मैथिली मसृणप्रिया।

महालक्ष्मीर्महाकाली महाकन्या महेश्वरी।।१२५
माहेन्द्री मेरुतनया मंदारकुसुमार्चिता।
मंजुमंजीरचरणा मोक्षदा मंजुभाषिणी।।१२६
मधुरद्राविणी मुद्रा मलया मलयान्विता।
मेधा मरकतश्यामा मागधी मेनकात्मजा।।१२७
महामारी महावीरा महाश्यामा मनुस्तुता।
मातृका मिहिराभासा मुकुंदपदविक्रमा।।१२८

महादेवी, महाभाग, मालिनी, मीनलोचना, मायातीता (माया से परे) मधुमती, (मधुमास स्वरूपा) मधुद्रवा (मधु के अर्पण से द्रवित होने वाली) मानवी, मधुसम्भूता (मधुमास में प्रादुर्भूत) मिथिलापुरवासिनी, मधुकैटभसंहर्त्री, मेदिनी, मेघमालिनी (मेघ समूह के मध्य सुशोभित), विद्युत मन्दोदरी महामाया, मैथली, मसृणप्रिया (मधुर द्रव्यों से प्रसन्न होने वाली) महालक्ष्मी, महाकाली, महाकन्या महेश्वरी, माहेन्द्री, मेरुतनया, मन्दारक्रुसुमार्चिता, मंजुमंजीरचरणा (पाँवों में मधुर घोष नूपुर धारण करने वाली) मोक्षदा, मंजुभाषिणी, मधुर द्राविणी, मुद्रा, मलया, मलयान्विता, मेघा, मरकतश्यामा (मरकतमणि जैसी श्याम) मागधी, मेनकात्मजा, महामारी, महावीरा, महाश्यामा, मनुस्तुता मातृका मिहिराभासा (सूर्य के समान आभावाली) मुकुन्दविक्रमा (हरि-चरणों की अनुगामिनी) ।१२३—१२८।

मूलाधारस्थिता मुग्धा मणिपूरकवासिनी।
मृगाक्षी महिषारूढामहिमासुरमर्दिनी।।१२६
योगासना योगगम्या योगा यौवनकाश्रया।

यौवनी युद्धमध्यस्था यमुना युगधारिणी।।१३०

यक्षिणी योगमुक्ता च यक्षराज प्रसूतिनी।

यात्रा यान विधानज्ञा यदुवंशसमुद्भा।।१३१

यकारादिहकारांता याजुषी यज्ञरूपिणी।

यामिनी योगनिरता यातुधानभयंकरी।।१३२

रुक्मिणी रमणी रामा रेवती रेणुका रतिः।

रौद्री रौद्रप्रियाकारा राममाता रतिप्रिया।।१३३

रोहिणीराज्यदा रेखा रमा राजीवलोचना।

राकेशी रूपसंपन्ना रत्नसिंहासनस्थिता।।१३४

मूलाधारस्थिता, मुग्धा, मणिपूरकवासिनी, मृगाक्षी, महिषारूढ़ा, महिषासुरमर्दिनी, योगासना, योगगम्या, योगा, यौवनकाश्रया, यौवनी, युद्धमध्यस्था, यमुना, युगधारिणी, यक्षिणी, योगमुक्ता, यक्षरालप्रसूतिनी यात्रा, यानविधानज्ञा (विमानों का विधान जानने वाली) यदुवंशसमुद्भवा, यकारादिहकारान्तरा (यकार से होकर पर्यन्त समस्त अक्षररूपा) याजुषी (यजुर्वेदरूपा) यज्ञरूपिणी, यामिनी योगनिरता, यातुधानभयंकरी (राक्षसों के लिए विकराल) रुक्मिणी, रमणी, रामा, रेवती, रेणुका, रति, रौद्री, रौद्र प्रियाकारा राममाता रतिप्रिया, रोहिणी, राज्यदा रेखा, रमा, राजीवलोचना, राकेशी रूपसम्पन्ना, रत्नसिंहासनस्थिता।१२६–१३४।

रक्तमाल्यांबरधरा रक्तगंधानुलेपना।

राजहंससमारूढा रंभा रक्तबलिप्रिया।।१३५

रमणीययुगाधारा राजिताखिलभूतला।

रुरुचर्मपरीधाना रथिनी रत्नमालिका।।१३६

रोगेशी रोगशमनी राविणी रोमहर्षिणी।

रामचन्द्रपदाक्रान्ता रावणच्छेदकारिणी।।१३७

रक्तवस्त्रपरिच्छन्ना रथस्था रुक्मभूषणा।

लज्जाधिद्रेवता लीला ललिता लिंगधारिणी।।१३८

लक्ष्मीर्लोलाँ लुप्तविषा लोकिनी लोकविश्रुता।

लज्जा लम्बोदरी देवी ललना लोकधारिणी।।१३६

वरदा वंदिता विद्या वैष्णवी विमलाकृतिः।

बाराही विरजा वर्षा वरलक्ष्मीर्विमलासिनी।।१४०

रक्तमाल्याम्बरधर, रक्तगंधोनुलेपना, राजहँसतारुढा रंभारक्त बलिप्रिया, रमणीययुगाधारा, राजिताखिलभूतला, रुरुचर्मपरीधानारथिनी रत्नमालिका, रोगशमनी, राविणी (भयंकर गर्जना वाली) रोमहर्षिणी, रामचन्द्रपदाक्रान्ता, रावणच्छेदकारिणी, रक्तवस्त्रपरिच्छन्ना, रथस्था, रुक्मभूषणा, लज्जाधिदेवता, लीला (चंचला) ललिता लिंगधारिणी, (चिह्नमयी) लक्ष्मी, विषा (लुप्तविष का लोप करने वाली) लोकिनी, लोक विश्रुता, लज्जा लम्बोदरी, ललना, लोकधारिणी, वरद्रा, वंदिता, विद्या वैष्णवी, विमलाकृति, वारही, विरजा, वर्षा (संवत्सरमयी) वरलक्ष्मी, विलासिनी।१३५—१४०।

विनता व्योमध्ययस्था वारिजासनसंस्थिता।

वारुणी वेणुसंभूता वीतिहोत्रा विरूपिणी।।१४१

वायुमण्डलमध्यस्था विष्णुरूपा विधिप्रिया।

विष्णुपत्नी विष्णुमती विशालाक्षी वसुन्धरा।।१४२

वामदेवप्रिया वेला वज्रिणी वसुदोहनी।

वेदाक्षपरीतांगी वाजपेयफलप्रदा।।१४३
वासवी वामजननी वैकुण्ठनिलया वरा।
व्यासप्रिया वर्मधरा वाल्मीकिहरिसेविता।।१४४
शाकम्भरी शिवा शांता शारदा शरणागतिः।
शातोदरी शुभाचारा शुंभासुरविमर्दिनी।।१४५
शोभावती शिवाकारा शंकरार्धशरीरिणी।
शाणा शुभाशया शुभ्रा शिरः संधानकारिणी।।१४६

विनता, व्योम-मध्यस्था, वारिजासनसंस्थिता वरुणी, वेणुसंभूता (बाँसुरी) वीतिहोत्रा विरूपिणी (अद्भुतरूप वाली) वायुमण्डलमध्यस्था विष्णुरूपा, विधिप्रिया, विष्णुपत्नी, विष्णुमती, विशालाक्षी, बसुन्धरा, वामदेव प्रिया, वेला (समय की अधिष्ठात्री) वभ्रिणी, वसुदोहिनी। वेदाक्षपरीताँगी, (वेद के अक्षरी युक्त अङ्ग वाली) बाजपेयफलप्रदा, वासवी; वातजननी, वैकुण्ठनिलया, वरा, व्यासप्रिया, वर्मधरा, वाल्मीकिपरिसेविता, शाकम्भरी, शिवा, शान्ता, शारदाशरणागति शतोदरी, (तेजोमय उदर वाली) शुभाचारा, शुम्भासुर, विमर्दिनी शोभावती, शिवाकारा, शंकरार्धशरीरिणी (पार्वती) शाणा (रक्तवर्णा) शुभाशया, शुभ्रा शिरसंधानकारिणी (दैत्यों के शीश पर बाणसंधान करने वाली)।।१४१–१४६।।

शरावती शरानन्दा शरज्योत्स्ना शुभानना।
शरभा शूलिनी शुद्धा शबरी शुकवाहना।।१४७
श्रीमती श्रीधरानंदा श्रवणानंददायिनी।
शर्वाणी शर्वणीवंद्या षड्भाषा षड्तुप्रिया।।१४८
षडाधारस्थिता देवी षण्मुखप्रियकारिणी।

षडंगरूपसुमतिसुरासुरनमस्कृता।।१४६
सरस्वती सदाधारा सर्वमंगलकारिणी।
सामगानप्रिया सूक्ष्मा सावित्री सामसंभवा।।१५०
सर्वावासा सदानन्दा सुस्तनी सागराम्बरा।
सर्वैश्वर्यप्रिया सिद्धिः साधुबंधुपराक्रमा।।१५१
सप्तर्षिमंडलगता सोममंडलवासिनी।
सर्वज्ञा सांद्रकरुणा समानाधिकवर्जिता।।१५२

शरावती (भक्तों की वाणों से रक्षा करने वाली) शारानन्दा (जिन्हें बाण युद्ध में आनन्द आता है) शरज्ज्योत्स्ना, शुभानना, शरभा शूलिनी, शुद्धा, शबरी, शुकवाहनी, श्रीमती, श्रीधरानन्दा (विष्णु को सुख देने वाली) श्रवणानंददायिनी (चरित्र श्रवण करने वालों को आनंद देने वाली) शर्वाणी, शर्वरीवन्द्या (रात्रि या प्रदोष में वन्दनीया) षड्भाषा षड्ऋतुप्रिया, षडाधारस्थित षण्मुखप्रियकारिणी (स्वामी कार्तिकेय का इच्छित करने वाली) षडंगरूपसुमतिसुरनमस्कृता (षडङ्ग रूपी सुमति संज्ञक देवताओं और दैत्यों द्वारा नमस्कार को प्राप्त हुई) सरस्वती, सदाधारा, सर्वमङ्गलकारिणी, सामगान, सूक्ष्मा, (सूक्ष्मरूप वाली) सावित्री, सामसंभवा (सामवेद से उद्भुत) सर्वावास (सब प्राणियों में स्थित) सदा नन्दा सुस्तनी (श्रेष्ठ दुग्धमयं) सागराम्बरा (समुद्र रूपी वस्त्र के धारण करने वाली) सर्वैश्वर्यप्रिया, सिद्धि साधुवन्धुपराक्रमा (पराक्रम को साधु जन के हितार्थ प्रयोग में लाने वाली), सप्तर्षिमंडलगता (आकाशस्थ सप्तऋषि मण्डल में निवास करने वाली) सोममंडल वासिनी (चन्द्रमंडल में स्थित)

सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा (करुणामयी) समानाधिक बर्जिता (सदैव समान रहने वाली)।।१४७–१५२।।

सर्वोत्तुङ्गा संगहीना सद्‌गुणा सकलेष्टदा।
सरघा सूर्यतनया सुकेशी सोमसंहतिः।।१५३
हिरण्यवर्णा हरिणी ह्रींकारी हंसवाहिनी।
क्षौमवस्त्रपरीतांगी क्षीराब्धितनया क्षमा।।१५४
गायत्री चैव सावित्री पार्वती च सरस्वती।
वेदगर्भा वरारोहा श्रीगायत्री पराम्बिका।।१५५
इति साहस्त्रकं नाम्ना गायत्र्याश्चैव नारद।
पुण्यदं सर्वपापघ्नं महत्संपत्तिदायकम्।।१५६
एवं नामानि गायत्र्यास्तोषोत्पत्तिकारिणः।
अष्टम्यां च विशेषेण पठितव्यानि द्विजैः सह।।१५७
जपं कृत्वा होमपूजाध्यानं कृत्वा विशेषतः।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गायत्र्यास्तु विशेषतः।।१५८

सर्वोंतुंगा (सर्वोच्च) संगहीना (अनासक्त) सत्‌गुणा सकलेष्टदा (सम्पूर्ण अभीष्ट प्रदात्री) सरघा (मधु मक्षिका में भी स्थित) सूर्यतनया (सूर्य-पुत्री) सुकेशी, सोमसंहिता (चन्द्रमा जैसी आभा वाली) हिरण्यवर्णा (सुवर्ण जैसे अङ्गवाली) हरिणी (कुछ हरे वर्ण से युक्त) ह्लींकारी हंसवाहिनी, क्षौमवस्त्रपरीतांगी (रेशमी परिधान से ढके अङ्गों वाली) क्षीरब्धितनया (क्षीरसागर से प्रकट हुई) क्षमा, गायत्री, सावित्री, पार्वती, सरस्वती, वेदगर्भा (वेदों को उत्पन्न करने वाली) वरारोहा, श्रीगायत्री और पराम्बिका।१५३–१५५। हे नारद ! भगवती गायत्री के यह सहस्त्र

नाम हैं, यह पुण्यदायका सर्वपापनाशका और महान् सम्पत्ति देने वाले हैं।१५६। यह सभी नाम भगवती गायत्री को संतुष्ट करते हैं, अष्टमी के दिन इस सहस्रनाम का विशेष रूप से ब्राह्मणों के सहित पाठ करे।१५७। विशेषकर जप, होम, पूजा, ध्यान आदि के द्वारा उपासनाकरे और ऐसे-वैसे लोगों से इस गायत्री सहस्रनाम की चर्चा भी न करे।१५८।

सुभक्ताय सुशिष्याय वक्तव्यं भूसुराय वै।
भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यश्च बांधवेभ्यो न दर्शयेत्।।१५९
यद् गृहे लिखितं शास्त्रं भयं तस्य न कस्यचित्।
चञ्चलापि स्थिरा भूत्वा कमला तत्र तिष्ठति।।१६०
इदं रहस्यं परमं गुह्याद्गुह्यतरं महत्।
पुण्यप्रदं मनुष्याणां दरिद्राणां निधिप्रदम्।।१६१
मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकामदम्।
रोगाद्वै मुच्यते रोगी बद्धो मुच्येत बन्धनात्।।१६२
ब्रह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयिनो नराः।
गुरुतल्पगतो वाऽपि पातकान्मुच्यते सुकृत्।।१६३
असत्प्रतिग्रहाच्चैवाभक्ष्याभक्ष्याद्विशेषतः।
पाखण्डानृतमुख्येभ्यः पठनादेव मुच्यते।।१६४
इदं रहस्यममलं भयोक्तं पद्मजोद्भव।
ब्रह्मसायुज्यदं नृणां सत्यं सत्यं न संशयः।।१६५

सुयोग्य भक्तजन श्रेष्ठ शिष्य और ब्राह्मण के प्रति ही इसे कहे भ्रष्ट साधक अपना बांधव हो तो उसके सामने इसका दिग्दर्शन न करे।१५९। जिस गृह में गायत्री विषयक शास्त्र

लिखा जाता है, वहाँ कभी भय उपस्थित नहीं होता, चंचला लक्ष्मी भी वहाँ स्थिर रूप से प्रतिष्ठित रहती है।१६०। यह गोपनीय से भी गोपनीय परम रहस्य है, यह पुण्यदायक और दरिद्रियों को भी धन प्रदान करने वाला।१६१। मुमुक्षुओं को मोक्ष का देने वाला और अभिलाषियों की सब कामनाएँ पूर्ण करने वाला है, इससे रोगी रोगमुक्त और बन्दी बन्धन मुक्त होता है।१६२। ब्रह्महत्या सुरापान, सुवर्ण-चोरी, गुरुतप्लगमन के भीषण पापों से भी छुटकारा मिल जाता है।१६३। निषिद्ध दान ग्रहण करने, अभक्ष्य भक्षण करने, मिथ्या भाषण और पाखंड करने से उत्पन्न पाप-फल भी इसके पढ़ने से नष्ट हो जाता है।१६४। हे नारद ! मेरे द्वारा कहा गया यह रहस्यमय वर्णन मनुष्यों को ब्रह्मसायुज्य प्रदान करता है यह निस्संदेह सत्य है।१६५।

भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठतम् धर्मग्रन्थ

१.	ऋग्वेद ४ खण्ड-सम्पूर्ण	(भा० टी०)	....
२.	अथर्ववेद २ खण्ड-सम्पूर्ण	(भा० टी०)	....
३.	यजुर्वेद-सम्पूर्ण	(भा० टी०)	....
४.	सामवेद-सम्पूर्ण	(भा० टी०)	....

उपनिषद्

५.	१०८ उपनिषद् ३ खण्ड	(भा० टी०)	....
६.	बृहदारण्यकोपनिषद्	(भा० टी०)	....
७.	छान्दोग्योपनिषद्	(भा० टी०)	....

गीता

८.	ज्ञानेश्वरी भगवद् गीता	(भा० टी०)	....
६.	अष्टावक्र गीता	(भा० टी०)	....

दर्शन

१०.	वैशेषिक दर्शन	(भा० टी०)	....
११.	न्याय दर्शन	(भा० टी०)	....
१२.	सांख्य दर्शन	(भा० टी०)	....
१३.	योग दर्शन	(भा० टी०)	....
१४.	वेदान्त दर्शन	(भा० टी०)	....
१५.	मीमांसा दर्शन	(भा० टी०)	....

पुराण

१६.	शिव पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
१७.	विष्णु पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
१८.	मार्कण्डेय पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....

१६.	गुरूड़ पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
२०.	देवी भागवत पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
२१.	हरिवंश पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
२२.	पद्म पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
२३.	वामन पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
२४.	कालिका पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
२५.	वाराह पुराण २ खण्ड	(भा० टी०)	....
२६.	गणेश पुराण	(भाषा)	....
२७.	सूर्य पुराण	(भा० टी०)	....
२८.	आत्म पुराण	(भा० टी०)	....
२६.	कल्कि पुराण	(भा० टी०)	....
३०.	गायत्री पुराण	(भाषा)	....
३१.	देवी भागवत पुराण	(भाषा)	....

रामायण, कथा, इतिहास

३२.	आनन्द रामायण साइज २२'' ` २६''/८	(भा० टी०)	....
३३.	श्रीमद्‌भागवत सप्ताह कथा	(भाषा)	....
३४.	महाभारत साइज १८'' × २२''/८	(भाषा)	....
३५.	महाभारत साहज २०'' × ३०''/१६	(भाषा)	....
३६.	पंचतन्त्र	(भा० टी०)	....
३७.	हितोपदेश	(भा० टी०)	....
३८.	दृष्टान्त सरित सागर	(भा० टी०)	....

धर्म शास्त्र

३६.	२० स्मृतियाँ २ खण्ड	(भा० टी०)	....
४०.	मनुस्मृति	(भा० टी०)	....

नीति शास्त्र

४१.	कौटिल्य अर्थशास्त्र	(भा० टी०)	....
४२.	विदुर नीति	(भा० टी०)	....

४३. चाणक्य नीति (भा० टी०) ....

४४. भर्तृहरिशतक त्रय (भा० टी०) ....

मन्त्र-साहित्य

४५. मन्त्र शक्ति से रोग निवारण ....

४६. मन्त्र शक्ति से विपत्ति निवारण ....

४७, मन्त्र शक्ति से कामना सिद्धि ....

४८. मन्त्र शक्ति के अद्‌भुत चमत्कार ....

४९. शिव सिद्धि ....

५०. भैरव सिद्धि ....

५१. दुर्गा सिद्धि ....

५२. शाबर मन्त्र सिद्धि ....

५३. गणेश सिद्धि ....

५४. हनुमत् सिद्धि ....

५५. बगलामुखी सिद्धि ....

५६. काली सिद्धि ....

तन्त्र साहित्य

५७ तन्त्र महाविज्ञान २ खण्ड ....

५८. तन्त्र विज्ञान ....

५९. तन्त्र रहस्य ....

६०. यन्त्र महासिद्धि ....

६१. लक्ष्मी सिद्धि ....

६२. दत्तात्रेय तन्त्र ....

६३. उड्डीश तन्त्र ....

६४. रूद्रयामल तन्त्र ....

गायत्री-साहित्य

६५. गायत्री रहस्य ....

६६. गायत्री सिद्धि ....

६७. महामन्त्र-गायत्री ....

६८. गायत्री साधना के चमत्कार ....

योग-साहित्य

६६.	ध्यान की सरल साधनायें	....	....
७०.	ध्यान के गहरे प्रयोग	....	....
७१.	त्राटक से मानसिक शान्ति	....	....
७२.	प्राणायाम के असाधारण प्रयोग	....	....
७३.	योगासन से रोग निवारण	....	....
७४.	हिप्नोटिज्म	....	....

वेदान्त

७५.	योगवाशिष्ठ २ खण्ड	(भा० टी०)	....
७६.	विचार सागर	(भा० टी०)	....
७७.	विचार चन्द्रोदय	(भा० टी०)	....
७८.	पंचीकरण	....	....

ज्योतिष और सामुद्रिक

७६.	ताजिक नीलकण्ठी	(भा० टी०)	....
८०.	कर्म विपाक संहिता	(भा० टी०)	....
८१.	मुहूर्त चिन्तामणी	(भा० टी०)	....
८२.	लग्न चन्द्रिका	(भा० टी०)	....
८३.	हस्त रेखा महाविज्ञान	....	....
८४.	प्रारम्भिक ज्चयोतिष विज्ञान	....	....
८५.	द्वादश ग्रह फलादेश विज्ञान	....	....
८६.	महादशा विज्ञान	....	....
८७.	ज्योतिष योग रत्नाकर	....	....
८८.	रत्न ज्योतिष विज्ञान	....	....

प्रकाशक :-

संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, बरेली

(उ०प्र०)

प्रकाशक

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, बरेली–243 003 (उ.प्र.) फोन : 0581–2474242